

चतुर्थ अध्याय

“अलका सरावगी के उपन्यासों  
का शिल्प”

## चतुर्थ अध्याय

### “अलका सरावगी के उपन्यासों का शिल्प”

प्रस्तावना :-

प्रत्येक साहित्य कृति भाषा के माध्यम से विशिष्ट रचनात्मक रूप लेकर आविष्कृत होती है। साहित्य कृति के रचनात्मक रूप का संबंध शिल्प से है। साहित्य कृति के शिल्प का अध्ययन करने के लिए शिल्प की संकल्पना को समझना अनिवार्य है। “ ‘शिल्प’ का अर्थ है ‘कारीगरी’ और ‘विधि’ का अभिप्राय है ‘प्रणाली’ किसी भी रचना को प्रस्तुत करने की कारीगर प्रणाली ही उसकी शिल्प-विधि है।”<sup>1</sup>

‘शब्द कल्पद्रुम’ में ‘शिल्प’ शब्द “कलादिक कर्म” के रूप में स्पष्ट किया है।<sup>2</sup>

रचनाकार अपनी अनुभूतियों को उपयुक्त ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए शिल्प संबंधी नये-नये प्रयास और प्रयोग करता रहता है। प्रतिभाशाली रचनाकार की अनिर्बन्ध प्रतिभा नये रूपों का निर्धारण करती है और नयी शिल्प-विधियों की खोज में लगा रहता है।

श्री वामन शिवराम आपटे के अनुसार ‘शिल्प’ शब्द की व्युत्पत्ति “शिल् + पक है, जिसका अर्थ - कला, ललित कला, यांत्रिक कला, कुशलता, कारीगरी आदि।”<sup>3</sup>

आधुनिक हिंदी साहित्यकार तथा आलोचक शिल्प शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के ‘आर्टिस्ट्री (Artistry), क्राफ्ट (Craft), एक्सप्रेसन (Expression), सेटिंग (Setting), फार्म (Form), स्ट्रक्चर (Structure), कन्स्ट्रक्शन (Construction), डिजाइन (Design), टेकनीक (Technique) आदि शब्दों के करीब-करीब मानते हैं।”<sup>4</sup>

‘बृहत् हिंदी-कोश’ में शिल्प के बारे में कहा है - “कला आदि कर्म (वात्स्यायन ने चौसठ कलाएँ गिनाई है।) उसी प्रकार हुन्नर, कारीगरी, स्त्रुवा, दक्षता, हस्तकर्म, रूप, आकृति, निर्माण, सृष्टि, धार्मिक कृत्य, अनुष्ठान आदि।”<sup>5</sup>

- 
1. डॉ. पांडुरंग पाटील - देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य, पृ. 192
  2. पी. वी. कोटम - श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्पविधान, पृ. 40
  3. वही, पृ. 40
  4. वही, पृ. 42
  5. वही, पृ. 44

आज उपन्यास साहित्य में नई-नई शिल्प विधियों का प्रयोग हो रहा है। नए साहित्यकार अपनी प्रतिभा द्वारा कुछ विधियों का गठन कर रहे हैं। हिंदी साहित्य में 'परीक्षा गुरु' (1882) से लेकर 'बाणभट्ट की आत्मकथा' (1996) तक उपन्यास विधा के बाद के उपन्यासों में शिल्प संबंधी नये प्रयोग दिखाई देने लगे हैं। नागार्जुन से लेकर प्रियंवदा तक दर्जनों लेखकों ने अपने उपन्यासों में शिल्प विषय के सजगता और प्रयोगशिलता का परिचय दिया है। 'शेखर : एक जीवनी' (1940) में अज्ञेय ने हिंदी उपन्यास के इतिहास में शिल्प विषयक प्रयोग का युग प्रवर्तक उदाहरण प्रस्तुत किया। नागार्जुन ने 'बलचनमा' उपन्यास में केंद्रीय पात्र के अवलोकन बिंदू से कथा प्रस्तुत करने की प्रविधि को अपनायी है, जो परम्परा बाद में शानी के 'काला जल' में भी मिलती है। स्वातंत्र्योत्तर काल में राही मासूम रजा, प्रियंवदा और अलका सरावगी जैसे उपन्यासकारों ने नई-नई शैली का प्रयोग किया।

#### 4.1 कथ्यगत विशेषताएँ :-

शिल्प की दृष्टि से कथावस्तु की अनेक विशेषताएँ हैं। इन विशेषताओं के कारण कथावस्तु - शिल्प अच्छा माना जाता है। ये विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

1. कथावस्तु के स्वाभाविकता, यथार्थता, विश्वसनीयता होनी चाहिए।
2. कथावस्तु में कुतूहल तथा रोचकता होनी चाहिए, जिससे पाठकों की रुचि आरंभ से लेकर अन्त तक एक समान रह सके।
3. मौलिकता कथावस्तु की मुख्य विशेषता है। मौलिकता तथा नवीनता के प्रति आकर्षण पाठक को होता है।
4. कथावस्तु में - परिवेश चित्रण, प्रकृति सौंदर्य, पृष्ठभूमि चित्रण आदि का सुगठित सामंजस्य होना चाहिए।
5. उपन्यास की प्रासंगिक कथा, मुख्य कथा वस्तु की पूरक, सहायक तथा प्रभाववर्धन करनेवाली होनी चाहिए।
6. कथावस्तु संरचना और प्रवृत्ति में शीघ्र ग्राह्य, मनोरंजक और आकर्षक होनी चाहिए।
7. कथानक अपने रचना विन्यास और संगठन में विशिष्ट होना चाहिए।

## 4.2 आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तु :-

### 4.2.1 आरंभ :-

‘कलिकथा : वाया बाइपास’ इस उपन्यास में उपन्यास का आरंभ कोलकाता शहर के वर्णन से किया है। यह वर्णन पहले पृष्ठपर ही दिखाई देता है। प्रस्तुत उपन्यास का आरंभ पूर्वदीप्ति शैली से किया है। पहले पृष्ठपर ही दिखाई देता है कि किशोर बाबू की उम्र के बहत्तरवे साल में हार्ट की बाइपास सर्जनी से गुजरना पड़ता है। तब से उनका दिल तथा दिमाग पूरी तरह से बदल जाता है। यही से विषयवस्तु का आरंभ होता है।

‘शेष कादम्बरी’ इस उपन्यास का आरंभ लेखिका अलकाजी ने कुछ अलग ढंग से किया है। रूबी दी जो एक समाजसेविका है। उसके पास एक लड़की का केस सुलझने के लिए आता है। उस आवेदन को लेखिका ने वैसे के वैसे लिखा है। इस आवेदन को पढ़ते-पढ़ते रूबी दी को उस सामने बैठी लाचार लड़की सविता की हालत का अंदाजा लगता है। इस उपन्यास में भी लेखिका ने पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग किया है। इसका आरंभ भी पूर्वदीप्ति शैली से किया है। और यही से विषयवस्तु का आरंभ हो जाता है।

‘कोई बात नहीं’ इस उपन्यास का आरंभ दो काव्य पंक्तियों के साथ हुआ है -

‘काहे री नलिनी तू कुम्हलानी ।

तेरे ही नाल सरोवर पानी।’<sup>1</sup>

सुच्चा बाबू जो गंगा नदी के बहते पानी से बातें कर रहा है और उसे अपनी बातें समझाने की कोशिश कर रहा है। कोलकाता और हावडा ब्रिज का उल्लेख अलका जी ने आरंभ में ही किया है। इससे मालूम होता है कि अलका जी ने अपने उपन्यास में कोलकाता शहर का वर्णन किया है। सुच्चा बाबू का अल्लडपन अलका जी ने आरंभ में प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार अलका सरावगी ने अपने तीनों उपन्यासों में कोलकाता शहर का वर्णन किया है। कोलकाता शहर में बसे हर नगर का, हर वन का, हर आदमी को लेखिका ने परखा है और उन्हें लोगों के सामने लाने की कोशिश की है। उनकी हर समस्या का समाधान करने की कोशिश की है।

---

1. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृ. 6

#### 4.2.2 विकास :-

‘कलिकथा : वाया बाइपास’ इस उपन्यास के आरंभ के बाद विषयवस्तु का विकास दिखाया है। विषयवस्तु के विकास में निरंतर प्रवाह नहीं रहता। विषयवस्तु में एक विषय नहीं है। एक समस्या नहीं है। विषयवस्तु में कोलकते के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक विचारधाराओं का वर्णन उपन्यास में किया है। उपन्यास में किशोरबाबू के माध्यम से मारवाडी समाज के चित्रण के साथ स्वतंत्रता आंदोलन के पहले तथा बाद का चित्रण किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में मारवाडी समाज के अंधविश्वास, किशोर की माँ, भाभी जैसी विधवाओं की स्थिति, उनकी समस्या, विधवाओं के बारे में उनकी धारणा, अकाल पीड़ितों की दुर्दशा, दो पीढ़ियों के बीच का संघर्ष, अंग्रेजों के आगमन पर मिश्रित खून की समस्या, अंग्रेजों का भारतीय लोगों के साथ जानवरों जैसा व्यवहार, सांप्रदायिक हिंदु-मुस्लिम दंगे आदि का वर्णन हुआ है।

विवेच्य उपन्यास के जरिए अलका जी ने आधुनिक बोध भी देने की कोशिश की है। आधुनिक बोध किसी भी साहित्य का एकमात्र मानदंड होता है। प्रस्तुत उपन्यास में मारवाडी समाज की आत्मकेंद्रितता, कोलकाता शहर की दरिद्रता, दूसरे महायुद्ध से मानवी जीवन में आया बिखराव, प्राकृतिक आपदा, भुखमरी, प्राकृतिक प्रकोपों की पीडा का व्यापारियों द्वारा उठाया जानेवाला फायदा, मारवाडी नारी की अशिक्षा, पर्दा पद्धति आदि प्रधान घटनाओं को लेखिका ने उजागर किया है। बौने व्यक्तित्व, टेस्ट ट्युब बेबी जैसी आधुनातन समस्याओं को भी अलका जी ने अपने उपन्यास में चित्रित किया है।

‘शेष कादम्बरी’ यह अलका जी का दूसरा उपन्यास है। इसमें अलका जी ने रूबी दी जैसे उपन्यास के मुख्य पात्र के जरिए उपन्यास की विषयवस्तु का विकास दिखाया है। रूबी दी के ‘परामर्श संस्था’ में एक लडकी का केस आता है। इस केस से ही विषयवस्तु का विकास होता है। रूबी दी का पात्र ही विषयवस्तु को आगे तक ले जाती है। रूबी दी के सामाजिक चेतना से ही उपन्यास में आयी अनेक समस्याओं से उपन्यास को विकसित किया है। इसमें अलका जी ने समाज में हो रहे विविध घटनाओं को सामने लाया है। अलका जी ने इस उपन्यास में भी कोलकाता शहर की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक समस्याओं को उजागर किया है। अलका जी के ज्यादातर नारी जीवन पर लिखी रचनाएँ हैं। और ‘शेष कादम्बरी’ भी इसी का एक पहलू है। रूबी दी के जीवन के संघर्ष को कहानियों से उपन्यास में रोचकता बढ़ती है।

प्रस्तुत उपन्यास में अलका सरावगी ने समाज में नारी अत्याचार, वेश्याओं की स्थिति, असफल वैवाहिक जीवन, दाम्पत्य जीवन, आधुनिक नारी का रहन-सहन, विदेशी संस्कारों को अपनाने वाली नारी, एक-दूसरों को अकेलेपन में साथ देनेवाली आदि नारी जीवन को प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में अलका सरावगी ने शुरू से रूबी दी और कादम्बरी इन दोनों में टेलिफोन पर बातें करते रहना और एक दूसरे का हाल समझना इससे विषयवस्तु में अलगता के साथ व्यवधान भी पड़ता है।

“रूबी दी, रूबी दी, कहिए, मैं कादम्बरी, तबीयत - पानी ठीक है तो ?”<sup>1</sup>

इससे मालूम पड़ता है कि इन दोनों में अलग ही रिश्ता है। जो हर छोटी से छोटी बात का ध्यान रखती है।

अलका जी ने इसमें एक सदी से दूसरी सदी तक के समय और स्मृतियों के इतिहास के तनाव से नई उत्सुकता जगाने की कोशिश की है। सारी कथा रूबी दी और उसके ‘परामर्श’ में आयी समस्याओं से घीरी हुई है। उसमें बीच-बीच में रूबी दी के पारिवारिक जीवन की भी कथाएँ हैं।

‘कोई बात नहीं’ अलका जी का तिसरा उपन्यास है। इसे अलकाजी ने एक सतरह साल के शारीरिक रूप से अक्षम लड़के की कहानी लिखी है। शशांक जो एक ऐसा लड़का है जो चल और बोल नहीं सकता। इसके ईदगिर्द ही विषयवस्तु घुमती रहती है। इसमें शशांक, शशांक की दादी, जतीन दा, माँ, आरती मौसी इन्होंने जो किस्से शशांक को सुनाए हैं, इसी किस्सों से उपन्यास की विषयवस्तु आगे बढ़ जाती है। अलका जी ने एक अपाहिज लड़के को उपन्यास का विषय बनाया है। शशांक को बताए किस्सों से अलका जी ने विषयवस्तु का आरंभ किया है। जतीन दा के आतंकवाद के कारनामों, दादी के घुटन भरे वैवाहिक जीवन के किस्से, बार-बार इन्हीं शब्दों और मुहावरों में कही कहानियों, आरती मौसी की कहानियों से उपन्यास की विषयवस्तु आगे बढ़ती रहती है। दादी के वैवाहिक जीवन से शशांक पर कुछ ज्यादा परिणाम होता है।

“क्यों ? अकेले जाने से तुम्हारे ससूरजी बाघ बनकर तुम्हें खा जाते क्या ?” शशांक ने बचपन में इस कहानी के इस बिंदु पर पूछा था।<sup>2</sup>

---

1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ. 13

2. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृ. 31

इस प्रकार दादी के किस्से-कहानियों से शशांक हमेशा घिरा रहता। और अकेलेपन में उसे याद करता रहता। सबसे अलग और विचित्र कहानियाँ उस तक पहुँचती हैं जतीन दा के मार्फत जिनसे वह बिना किसी और के जाने हर शनिवार विक्टोरिया मेमोरियल के मैदान में मिलता है।

“शशांक विक्टोरिया मैदान के पिछवाड़े के दरवाजे से अंदर घुसकर गिट्टी-बिछे रास्ते के दोनों तरफ के देवदार के पेड़ों को देखता हुआ अपनी बेंच की ओर बढ़ने लगा। उसने सोचा था कि गिट्टियों का रस्ता छोड़ बाएँ मुड़ जाएगा जहाँ से तालाब के उस पार वह अपनी बबुल तले की बेंच देख सकेगा।”<sup>1</sup> इस तरह हर शनिवार को शशांक विक्टोरिया मैदान पर जतीन दा को मिलने के लिए जाता था।

#### 4.2.3 संघर्ष :-

‘कलिकथा : वाया बाइपास’ इस उपन्यास में विषयवस्तु के विकास के बाद नायक किशोर बाबू के बहत्तरवें साल में दिल की नलियों में बहता खून जमने लगता है। एक रात किशोर बाबू ने एक सपना देखा कि वे अपनी बहू के पैरों पर अपने पिता भुरामलजी की पुरानी पगड़ी रखकर उसे गिड़गिड़ाकर कह रहे हैं कि मेरी इज्जत तुम्हारे हाथों में है। उसी रात किशोर बाबू के दिल में पहली बार दर्द उठा। उनकी दिल की नलियों में 90% खून जाम हो गया था। और उन्हें बाइपास ऑपरेशन से ही खोला जा सकता था। किशोर बाबू जीवन जीने के लिए बहत्तरवें साल में भी संघर्ष करते रहे।

“सत्तर साल पार करने के बाद भी दिमागी तौर पर किशोर बाबू जैसे असाधारण रूप से चौकन्ने व्यक्ति।”<sup>2</sup>

इस तरह किशोर बाबू अपनी ढलती उम्र के साथ भी और बाइपास ऑपरेशन से उन्हें आयी कठिनाइयों के साथ संघर्ष करते दिखायी देते हैं, जो उनका पिछा नहीं छोड़ती।

‘शेष कादम्बरी’ इस उपन्यास में रूबी दी अपने परामर्श संस्था में आयी अनेक केस को सुलझाने में हमेशा व्यस्त रहती है। उसी में उलझी रहती है। एक दिन रूबी दी अखबार पढ़ रही थी, तो उसमें उन्होंने पढ़ा कि एक लड़की को गाडी ने धक्का दिया और उसकी मृत्यु हो गई। यह पढ़कर रूबी दी को बहुत बड़ा सदमा पहुँचा। वह लड़की और कोई नहीं सविता थी, ऐसा अखबार में छपा था।

- 
1. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृ. 31
  2. अलका सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास, पृ.1

“क्या सचमुच उनका जीवन एकदम निरर्थक था, उनकी पढाई, उनकी ‘समाज सेवा’, ‘वामा स्टडी ग्रुप’ के मार्फत लेखकों-पत्रकारों-फिल्मवालों जैसे असाधारण मनुष्यों को जानने की चेष्टा, कविताएँ, लिखना - क्या यह सब अपने रोज सिकुडने को मजबूर, अहंकार को किसी तरह पुलाने-बल्लाने की कोशिश मात्र थी।”<sup>1</sup>

इस तरह रूबी दी हमेशा अपने समाज कार्यों से संघर्ष करती रहती है। उसी के साथ अपने जीवन की उन यादों को साथ जुझती रहती है।

‘कोई बात नहीं’ इस उपन्यास में शशांक एक शारीरिक रूप से अक्षम लडका है। वह चल और बोल भी नहीं सकता। उसे दूसरों का सहारा लेना पडता है। वह औरों जैसा नहीं है। शशांक को स्कूल जाते समय स्कूल का वह विशाल मैदान पार करने के लिए बहुत कष्ट होता था।

“उसके सामने स्कूल का विशाल हरा मैदान है, जिसे पार करना उसे हमेशा लगता है जैसे कोई यात्रा तय करनी हो। एक छोर से दूसरे छोर तक की यात्रा।”<sup>2</sup> शशांक को अपनी जिंदगी सरल तरीके से बिताने में हमेशा संघर्ष करना पडता था।

कोलकाता के नामी मिशनरी स्कूल में पढते वक्त अपनी गैरबराबरी को जीते हुए, उसका साबिका उन तरह-तरह की दूसरी गैरबराबरियों से भी होता रहता है, जो हमारे समाज में आसपास कुलबुलाती रहती है।

#### 4.2.4 चरमसीमा :-

‘कलिकथा : वाया बाइपास’ इस उपन्यास में मुख्य पात्र किशोर बाबू है, जो बहत्तर साल के हैं। किशोर बाबू की दिल की नलियाँ नब्बे प्रतिशत जाम हा गई थी। उसका इलाज एक ही था बाइपास ऑपरेशन। बाइपास ऑपरेशन के बिना कोई चारा नहीं था। इसलिए किशोर बाबू के परिवार के लोग ऑपरेशन करने का फैसला लेते हैं। बाइपास सर्जरी करके ही इस समस्या का हल हो सकता है। यहाँ संघर्ष चरम सीमा पर पहुँच जाता है।

‘शेष कादम्बरी’ में रूबी दी को उस भयानक हादसे से बहुत बडा सद्मा पहुँचता है। लेकिन मिसेस सूद सविता को जिन्दा बताती है। सविता की हालत को देखकर रूबी दी अचंबित हो जाती

- 
1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ. 104
  2. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृ. 30



है। उन्हें सविता की पिछली जिंदगी याद आती है। जब मिसेस सूद के यहाँ सविता को देखती है तो बहुत जोर का धक्का लगता है।

“पहले अखबार की खबर, फिर मिसेज सूद का सविता को जिन्दा बताकर किसी और को दिखाना! यह तो कोई बच्चा या बच्ची है। तभी चादर में लिपटा शरीर कुराहते हुए घूमा। वही दो आँखें। रूबी दी जड़ हो गई। सविता ही है।”<sup>1</sup>

सविता की ऐसी हालत देखकर रूबी दी ने उसे घर लाया। और उन्होंने सविता को ठीक करने का ठेका ही ले लिया। रूबी दी ने सविता को ठीक करने के लिए हड्डी के डॉक्टर की सलाह, एक्सरे, फिजियोथैरपी, मनोचिकित्सा, एक्वूप्रेशर और फ्लाय रेमेडी आदि कई इलाज करने की रूबी दी ने ठान ली।

‘कोई बात नहीं’ इस उपन्यास का शशांक अपने अपाहिजता से उब गया है और उसकी माँ उसका हर तरीके से इलाज कर रही है। लेकिन उस पर ज्यादा कुछ असर नहीं हो रहा है। एक दिन शशांक दोनो पाँवों पर खड़ा रहने की कोशिश करता है। इससे शशांक की माँ को बहुत आनंद मिलता है-

“शशांक ने अपने दोनों पाँव गाडी के बारह निकालकर जमीन पर रख दिए। और गाडी के खुले हुए दरवाजे को एक हाथ से पकड़ जोर लगाकर खड़ा हो गया।”<sup>2</sup>

शशांक को जैसा नया जन्म मिल जाता है। और उसकी माँ दोस्त अमित और फादर हेडमास्टर को बहुत खुशी होती है। शशांक स्कूल जाने पर उसे लगता है कि स्कूल का पहला दिन था, नये जन्म का पहला दिन।

शशांक की असली चरमसीमा तब बढ़ती है, जब लिफ्ट में व्हिल चेयर नहीं बैठ पाती। माँ ने चाचा से कहा - “व्हिल चेयर एकतल्ले पर रखो। लिफ्ट तक भी शशांक पैदल जाएगा और खड़े-खड़े ऊपर जाकर फिर व्हिल चेयर में बैठेगा।”<sup>3</sup> और यह चैलेंज शशांक स्वीकारता है और माँ की बातों को दृढ़ता देता है।

1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ. 158
2. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृ. 157
3. वही, पृ. 157

#### 4.2.5 अंत :-

‘कलिकथा : वाया बाइपास’ उपन्यास में अंत में किशोर बाबू अपनी समस्या का हल बाइपास सर्जरी करके सुलझाते हैं। प्रस्तुत उपन्यास का अंत पूर्वदीप्ति शैली में किया है। अंत में आजादी के बाद में आयी हुई भारत की स्थिति एवं गति का वर्णन किया है।

“अब तक लोग डरते आए थे कि तीसरा विश्वयुद्ध छिडा, तो पूरी पृथ्वी नष्ट हो जाएगी, पर वैसा कुछ नहीं घटा। जो घटा, वह बिलकुल अकल्पनीय था। एकदम जिसे अनहोनी कहते हैं। अचानक संसार में प्रकृति के पांचों तत्त्व - मिट्टी, जल, आग, आकाश और हवा-गडबडा गए।”<sup>1</sup>

इस प्रकार आजादी के बाद आयी प्राकृतिक आपदा से सारी दुनिया हिल जाती है। जो कभी घटित नहीं हुआ वह होनेवाला / हो रहा था। उपन्यास के अंत में किशोर बाबू उनका दोस्त शांतनु और अमोलक की बातें कही हैं। उपन्यास का अंत बहुत कलात्मकता से प्रस्तुत किया है।

‘शेष कादम्बरी’ उपन्यास के अंत में रूबी दी अपने सभी रिश्तेदारों, सहेलियों, नौकरों को याद करती रहती है। इसी बीच उसको कादम्बरी की याद आती है। बहुत दिनों से उसे फोन नहीं किया था। सविता का जाने का दुःख रूबी दी को बहुत सता रहा था। यहीं बात कादम्बरी को बताना चाहती थी। लेकिन रूबी दी को फोन पर कोई और ही मिलता है। एक मर्द की आवाज सुनायी देती है। “कादम्बरी मद्रास गई है। वहाँ से अंदमान जैल ..... कहकर फोन रख दिया गया।”<sup>2</sup>

गौतम कादम्बरी का पति इसने फोन उठाया और उसके इस अंदाज से रूबी दी हँस पडती है। रूबी दी एक सादे पन्ने पर वसीयत लिखना शुरू करती है। उस वसीयत में सायरा, सविता और कादम्बरी को अपनी जायदाद का वारीस बनाती है।

“आज 25 नवम्बर, 2000 के दिन रात साडे तीन बजे मैं ..... मेरी कादम्बरी से यह भी प्रार्थना है कि शेष कथा कादम्बरी खुद लिखे और जैसे चाहे लिखे - “ओवर टु कादम्बरी।”<sup>3</sup>

इस तरह ‘शेष कादम्बरी’ का अंत एक वसीयत नामे से होता है।

- 1 अलगा सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास, पृ.214
2. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ. 198
3. वही, पृ. 199

‘कोई बात नहीं’ के अंत में शशांक अपने अक्षम शरीर को संभालने की कोशिश करता है। माँ शशांक को पूरी तरह अच्छा करने की कोशिश में लगी रहती है, लेकिन शशांक में इलाज का ज्यादा असर नहीं हो रहा था। इसलिए माँ अंचभे में रहती है।

क्या वह यह सोच रही है कि मुँह से लार गिरती रहने और गरदन तक न संभाल पाने की हालत से वह कम-से-कम यहाँ तक तो पहुँच गया है। या फिर वह पहले की तरह उसके अपने आप, बिना किसी आदमी की सहायता के चलने का इंतजार करती-करती थकने लगी है।

इस तरह शशांक माँ के इस बर्ताव से अचंभा रहता है और वह सोच में पड़ता है कि पापा भी इसी तरह हताश होते होंगे।

‘वह पापा को देखता है तो वहाँ उसे हताशा साफ दिखाई पड़ती है।’<sup>1</sup> इस तरह शशांक अपने अक्षम शरीर से माँ-बाप को दुःखी नहीं देख सकता। माँ हमेशा उम्मीद लगाए बैठी है कि अब शशांक ठीक हो जाएगा। अंत में यही बहस शशांक के मन को दहला देती है।

#### 4.2.6 समीक्षा :-

‘कलिकथा : वाया बाइपास’ उपन्यास में कलियुग की कथा है - नायक किशोर की जुबानी, उसकी छह पीढ़ियों के माध्यम से। कथा का यह कलियुग 1857 के स्वतंत्रता संग्राम से अब तक के डेढ़ सौ वर्षों का है। पहले पृष्ठ से ही पता चलता है कि किशोर बाबू को उम्र के बहत्तरवे साल में हार्ट की बाइपास सर्जरी से गुजरना पड़ा और अस्पताल से वे सर में घाव लेकर आए। बस तब से उसका दिल व दिमाग पूरी तरह बदल गया। और बाइपास की यह वैज्ञानिक प्रक्रिया साहित्य के रूपायन का माध्यम बन गई। बाइपास के बाद किशोर बाबू जो कुछ करते हैं और जिस मामूली प्रश्नों पर गैर मामूली ढंग से सोचते हैं, उससे पत्नी व बेटा उन्हें पागल समझ लेते हैं। सर्जरी से किशोर बाबू में बहुत सारे बदलाव आते हैं। मन में प्रश्न आता है कि क्या वे सर्जरी के बिना किशोर बाबू में ऐसे विचार नहीं आ सकते थे। तो इसकी संभावना तो सतत बनी रहेगी, पर यथार्थ में ऐसा होने के लिए किसी कारण की दरकार होगी। फिर क्या यह बाइपास व्यंग्य तो नहीं कि एक सही आदमी बनने-बनाने के लिए आज के समय में समाज की ऐसी ही शल्य क्रिया करनी पड़ेगी। ऐसा हो पाता, तो कितना अच्छा।

---

1. अलगा सरावगी - कोई बात नहीं, पृ.218

जिस तरह सर्जरी के बिना किशोर बाबू के पात्र से ये सारे मानवी कार्य नहीं लिए जा सकते, उसी प्रकार बाइपास के प्रयोग के बिना इस उपन्यास में से इतने सारे कार्य नहीं किए जा सकते थे।

‘शेष कादम्बरी’ उपन्यास एक सदी से दूसरी सदी तक के समय और स्मृतियों के इतिहास के तनाव से नई उत्सुकता जगता है और साथही उपन्यास के परिचित ढाँचे को एक बार फिर तोड़ने की नई चुनौती भी पैदा करता है।

रूबी दी प्रस्तुत उपन्यास की मुख्य पात्र है, वह एक सोशल वर्कर है। समाज में हो रहे नारी अत्याचार को अपने ‘परामर्श संस्था’ में सुलझाने की कोशिश करती है। लेकिन इसमें एक केस ऐसा आता है कि उस केस का पता पहले पन्ने पर ही पता चलता है। सविता नाम की एक गरीब लडकी है। रूबी दी उसे पनाह देती है। धीरे-धीरे यह लडकी रूबी दी के दिल और घर में जगह बना लेती है। इस पूरे उपन्यास में अलका जी ने इस लडकी के किस्से ही ज्यादातर दिए हैं। रूबी दी की नातिन कादम्बरी जो दिल्ली में रहती है। हर बार इन्हें फोन पर ही बातें करते दिखाई देता है। यहाँ अलका जी ने ज्यादाती की है।

रूबी दी अंतिम समय सारी वसियत कादम्बरी, सायरा और सविता के नाम कुछ-कुछ हिस्से करती है, लेकिन यह वसियतनामा रूबी दी ने लिखा तो सही लेकिन उसे समझाकर जिसे जो मिला है वह कौन देगा ? और अंत में यह भी कहती है - ‘मेरी कादम्बरी से यह भी प्रार्थना है कि शेष कथा कादम्बरी खुद लिखे और जैसे चाहे लिखे - ‘ओव्हर टु कादम्बरी’<sup>1</sup> रूबी दी यह सब लिखती जरूर है, लेकिन क्या पता कादम्बरी इस बात को मान भी लेगी ? सविता को रूबी दी जो असली नाता है उससे गहरा रिश्ता मानती है, लेकिन रूबी दी के बाद सविता को कौन पहचानेगा ? उसे कौन अपनाएगा ? इस प्रकार रूबी दी अपने आप में एक बड़ा विश्वासी मानती है और औरों को भी अपनाती है क्योंकि वह एक सोशल वर्कर है।

‘कोई बात नहीं’ इस उपन्यास में शशांक सत्रह साल का एक लडका है जो दूसरों से अलग है क्योंकि यह दूसरों की तरह चल और बोल नहीं सकता। ऐसे लडके के सामने अलकाजी ने दादी के किस्से, अपने घुटन भरे बीते जीवन की दास्तान, जतीनदा की आतंक और हिंसा से भरी कहानियाँ, एक तरफ उसकी आरती मौसी है, जिसकी प्रायः खेदपूर्वक वापस लौट आनेवाली कहानियाँ का अंत

---

1. अलगा सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ. 199

और आरंभ शशांक को कभी समझ में नहीं आता। इन सारी बातों को यह कहा जा सकता है कि शशांक एक ऐसा लडका है जो शरीर से अक्षम है। यह सब कहानियाँ किस्से सुनकर कुछ हासिल नहीं होता। दादी माँ शशांक को जो कहानियाँ सुनाती है, वह पुरानी दादी के जीवन की गाथाएँ हैं, जो शशांक के लिए कुछ भी बोधार्थ नहीं है। इससे सिर्फ दादी का मन हलका होता है और शशांक उसे कहानी समझकर ले लेता है।

आरती मौसी की कहानियाँ जो बेमतलब होती हैं। लेकिन वह कुछ देर बाद फिर से जाग उठती है, इससे कथा में आस्वाद जरूर आता है। लेकिन शुरू में कथा निरस लगती है। उसका कोई मतलब ही नहीं समझता।

### 4.3 पात्र एवं चरित्र चित्रण :-

#### 4.3.1 पात्र एवं चरित्र-चित्रण का महत्त्व :-

प्रत्येक उपन्यासकार उपन्यासों में पात्रों का अविष्कार उनकी मनोवृत्ति के अनुकूल करता है। इसीलिए उपन्यास के पात्र सजीव, स्वाभाविक और प्रभावशाली प्रतीत होते हैं। उपन्यास की कथावस्तु में सुख-दुख को भोगनेवाले या संघर्ष में भाग लेनेवाले कुछ व्यक्ति होते हैं, उनका चित्रण उपन्यासकार करता है। इन व्यक्तियों को उपन्यास के पात्र कहा जाता है। “स्पष्ट है कि उपन्यासकार पात्र की मानसिकता का अंकन करता है, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति की अंतर्प्रवृत्ति दूसरे से भिन्न होती है। किसी व्यक्ति में जो गुण अधिक मात्रा में होते हैं, उन गुण दोषों के आधार पर उसका स्वभाव निर्भर होता है।”<sup>1</sup>

महान उपन्यासकार प्रेमचंद ने उपन्यास को मानव जीवन का चित्र कहकर मानव-जीवन के साथ उपन्यास के घनिष्ठ सम्बन्ध की घोषणा की है। “उपन्यासकार के सामने कथा के रूप में जो सबसे प्रथम वस्तु आती है, वह किसी व्यक्ति अथवा व्यक्ति-समूह की पहचान है।”<sup>2</sup>

पात्रों के क्रिया-कलाप और वार्तालाप से कथावस्तु का निर्माण होता है। पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश पड़ता है। पात्र जितने ही वास्तविक और जिवंत होंगे, उतना ही कथावस्तु में आकर्षण उत्पन्न होता है। इसलिए घटना प्रधान उपन्यासों की अपेक्षा चरित्र-प्रधान उपन्यास अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं।

- 
1. पी. वी. कोटम - श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्पविधान, पृ. 125
  2. वही, पृ. 125

“युग और परिवेश के अनुसार लेखक पात्र का निर्माण करता है।”<sup>1</sup> लेखक की संवेदना युग परिवर्तन में और उससे उत्पन्न जीवन वैविध्य तथा समस्याओं को जीवन्त रूप से जागृत करती है। “चरित्र का निर्माण वास्तव में पाठक करते है।”<sup>2</sup> क्योंकि लेखक को उपन्यास की रचना-प्रक्रिया के समय पाठकों का कुछ-न-कुछ ध्यान अवश्य रहता है। जब वह सोचता है कि अपनी रचना शक्ति के माध्यम से अधिक से अधिक मौलिक हो, अधिक से अधिक नव्य प्रदान करे, उस समय उसके अचेतन में पाठक का बिम्ब होता है।

मनोविश्लेषक फ्रायड के अनुसार “प्रत्येक व्यक्ति के चरित्र एवं व्यक्तित्व पर उस व्यक्ति के परिवार, समाज, वर्ग संस्कृति का प्रभाव पडता है। इन सबका मिश्रित प्रभाव उसके चरित्र और व्यक्तित्व को एक ऐसा रूप देता है, उसे विभिन्न प्रतिक्रियाओं को प्रभावी ढंग से करने के योग्य बनाता है। उसके प्रत्येक व्यवहार में सामाजिक वर्ग और संस्कृति की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है। व्यक्ति के इस प्रकार निर्मित को फ्रायड ने ‘सामाजिक चरित्र’ की संज्ञा दी है।”<sup>3</sup>

इस तरह वस्तु जगत के व्यक्ति वहीं होते हुए भी उपन्यास में कुछ भिन्न, अलग और बदले हुए दिखाई देते है। कभी-कभी उपन्यास का कोई पात्र उपन्यासकार के सारे नियंत्रणों को तोड़कर उसके हाथ से निकल जाता है और अपने जीवन की स्वाभाविक परिणति को प्राप्त करता है।

#### 4.3.2 चरित्र-चित्रण के भेद :-

उपन्यास में चरित्र-चित्रण प्रायः दो भेद माने जाते है, जिसे अधिकांश विद्वानों ने स्वीकार किया है -

- 1) सपाट चरित्र (फ्लैट कैरेक्टर)
- 2) जटिल चरित्र (राउण्ड कैरेक्टर)

सपाट चरित्र की प्रकृति प्रायः एक ही बिन्दु पर केंद्रित रहती है। पूरे उपन्यास में उसका चारित्रिक विकास स्थिर रहता है। उपन्यास के ऐसे पात्रों को पहचानने में कोई कठिनाई नहीं होती। स्पष्ट चरित्र अपने शुद्ध रूप में एक ही विचार या गुणों में निर्मित होते है, उनमें परिस्थितियों के अनुसार अपने चरित्र के आयाम को बदल डालने की क्षमता नहीं होती।

1. डॉ. प्रदीपकुमार शर्मा - हिंदी उपन्यासों का शिल्प विधान, पृ. 60
2. वही, पृ. 61
3. पी. वी. कोटमे - श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्प विधान, पृ. 126

इसके विपरित जटिल पात्र पाठकों के आकर्षण के केंद्र होते हैं। जिन्हें पहचानने के लिए पाठकों को अपनी ओर से प्रयास और श्रम करना पड़ता है। जटिल पात्र में परिस्थितियों के अनुसार विकास और परिवर्तन की पूरी संभावना रहती है। इनके चारित्रिक परिवर्तन के कारण ही पाठकों की जिज्ञासा बराबर बनी रहती है। आधुनिक उपन्यासों में अधिक जटिल पात्र ही चुने जाते हैं। अज्ञेय लिखित 'नदी के द्वीप' की रेखा और 'मछली मरी हुई' का निर्मल पद्मावत जटिल चरित्र के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

इसके अलावा नेन्सीहेल जैसे विद्वानों ने अन्य नामों से चरित्र विभाजन प्रस्तुत करने की कोशिश की है -

- 1) वे चरित्र जो प्रभावित करते हैं,
- 2) वे पात्र जो प्रभावित नहीं करते

“सपाट और जटिल चरित्र भी दो रूपों में निर्मित होते हैं - 1) अन्तः 2) बाह्य।”<sup>1</sup>

अन्तः का उदाहरण दे सकते हैं - 'नदी के द्वीप' का भुवन और रेखा। इस प्रकार हम चरित्र के रूपों को समझ सकते हैं।

#### 4.3.3 आलोच्य उपन्यासों में पात्र एवं चरित्र-चित्रण :-

##### 4.3.3.1 प्रमुख पात्र :-

‘कलिकथा : वाया बाइपास’ :-

##### 1) किशोर बाबू -

‘कलिकथा : वाया बाइपास’ में प्रमुख पात्र ‘किशोर’ है। जो मारवाडी समाज के मध्यवर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। यह नायक दबू है। उपन्यास के लिए आवश्यक नायक के गुणों से एक भी गुण इसमें नहीं है। लेकिन अंदरूनी संघर्ष को दबाकर यह जैसे - तैसे इस उपन्यास में अपना अस्तित्व बनाए रखता है।

‘कलिकथा : वाया बाइपास’ कलियुग की कथा है - नायक किशोर की जुबानी, उसकी छह पीढ़ियों के माध्यम से। पहले पृष्ठ पर ही पता चलता है कि किशोर बाबू को उम्र के बहत्तरवे साल में हार्ट की बाइपास सर्जरी से गुजरना पड़ा और अस्पताल से वे सर में एक घाव लेकर आए। “कोलकाता शहर के सबसे नामी अस्पताल में बाइपास सर्जरी करवाकर जब किशोर बाबू होश में

---

1. डॉ. प्रदीपकुमार शर्मा - हिंदी उपन्यासों का शिल्प विधान, पृ. 63

आए तो उन्होंने पाया कि उनके सिर के पिछले हिस्से में बहुत दर्द है।”<sup>1</sup> इसी दिन से उनका दिल और दिमाग पूरी तरह बदल गया।

किशोर बाबू की जिंदगी के तीन हिस्से दिखते हैं। पहले हिस्से में माँ, मामा, भैया, भाभी जैसे पारिवारिक सदस्यों से लेकर स्कूल मित्र सुभाष भक्त शांतनु और गांधी-प्रेमी अमोलक उनके इर्द-गिर्द हैं। इसमें किशोर बाबू के परदादा रामविलास भी समाहित हैं।

किशोर बाबू के स्कूली जीवन में उनके दो मित्र हैं - गांधी का पक्का अनुयायी अमोलक एवं सुभाष बाबू को कट्टर समर्थक शांतनु। इनके माध्यम से तत्कालीन नरम-गरम दिलों की दो धाराओं के विमर्शों के साथ हिंदू-मुस्लिम दंगों के बरक्स गांधीवाद व हिंदुवादी विचारधाराओं के द्वंद्व भी उभरे हैं - शांतनु और अमोलक दोनों ने किशोर बाबू को गुमराह किया था। इस विरोधाभासी वैचारिकता एवं हकीकत व आदर्शों की द्वंद्ववात्मकता के बीच बदहवास याने ‘झुटपुटी चेतना’ के इलाके में पहुँचे किशोर का प्रश्न - “क्या धर्म की दीवार इतनी मजबूत है कि उनमें खिडकियाँ नहीं बन सकती।”<sup>2</sup>

किशोर के जीवन की ‘दूसरी जिंदगी’ उसकी उम्र के बाईस साल से बहत्तर साल (सर्जरी होने) तक की है। “किशोर बाबू की जिंदगी के ये पचास साल भारत वर्ष के लोकतंत्र के पचास सालों की तरह हैं जिनमें आजादी की लड़ाई के आदर्शों की खुरचन तक नहीं रही।”<sup>3</sup> इन आदर्शों पर चलने के लिए उत्सुक, पर अपनी नियति से विवश किशोर बाबू भी आजादी के बाद बहुत बदले कि उन्हें बहुत करीब से जाननेवाले भी इस बदलाव को न जान सके, बल्कि उनकी बहुत प्रिय शांता भाभी। किशोर बाबू पिछला सब कुछ छोड़कर कमाने में लग गए। फैक्ट्री खुली। साउथ कोलकाता में घर हो गया। कार आ गई। पाँच बेटी एक बेटे के पिता बने। उन्हें पढाया ब्याहा। मामा का परिवार भूल गए, भाभी की अवहेलना की। 1997 में किशोर बाबू की सर्जरी हुई और तब उपन्यास के साक्ष्य पर उनकी तीसरी जिंदगी शुरू हुई।

कहने की जरूरत नहीं कि इसी तीसरी जिंदगी के आइने में ही बाकी उक्त दोनों जिंदगियाँ नुमायाँ हुई - किशोर बाबू एवं उनकी पत्नी आदि की यादों में, फाइलों के जरिए और पुरानी

1. अलका सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास, पृ. 1
2. वही, पृ. 1
3. वही, पृ. 109



डायरियों - पत्रों आदि के माध्यम से, जो फ्लैश बैंक को पुष्ट - प्रमाणित तो करते ही है, उसकी टेक्नीकल मोनोटोनी को तोड़ते हुए ताजी एवं विविधता भी लाते है।

किशोर बाबू स्वभाव से बहुत अधिक जिद्दी होने के साथ-साथ उनका चरित्र समझदार भी है। वह अपने भाभी से बहुत प्रेम करते है इसमें इनकी मार्मिकता झलकती है। उसी प्रकार अपने मित्रों के प्रति बहुत आत्मीयता से पेश आते है। उनके व्यक्तित्व का हर पहलु उनके स्वाभाविक ढंग को पेश करता है। उनका कोलकाता के प्रति लगाव है। किशोर बाबू की एक ही जिंदगी में तीन जिंदगियों का अनुभव करते है। यह उनके स्वभाव की खास विशेषताएँ कही जा सकती है। 70 वर्षीय किशोर बाबू को बाइपास सर्जरी से उनके जीवन में बदलाव आते है और सर्जरी के बाद वह अपने बचपन की जिंदगी में चले जाते है। इस तरह उनकी जिंदगी का पहला पाडाव बचपन दूसरा पच्चीस वर्षीय युवक का और तीसरा उनका असली जीवन। इस तरह किशोर बाबू की जिंदगी में चढ़-उतार के साथ उनके घरवाले भी इसमें अटक जाते है। किशोर बाबू अपने जीवन में स्वतंत्रता-पूर्व जिंदगी, स्वतंत्रता के बाद की जिंदगी जिते है जो एक विशिष्ट पाडाव है।

## II) 'शेष कादम्बरी' :-

### रूबी दी/गुप्ता :-

रूबी गुप्ता 'शेष कादम्बरी' की प्रमुख नारी पात्र है। रूबी गुप्ता सत्तर साल की उम्र में 'परामर्श संस्था' चलाती है। समाज में अनेक प्रकार की उलझने, समस्याएँ, स्त्री को सताती है, यही सुलझाने का काम रूबी गुप्ता करती हैं। रूबी दी एक समाजसेविका है, जो 'वामा स्टडी ग्रुप' भी चलाती है। इसके मार्फत लेखकों - पत्रकारों - फिल्मवालों जैसे असाधारण मनुष्यों को जानना, कविताएँ लिखना आदि में रूबी दी की रुचि थी। इस समाजसेवा में रूबी दी अपने पारिवारिक को बिलकुल भुल-सा गयी थी।

रूबी दी का पारिवारिक जीवन ज्यादा दिन तक टिक नहीं पाया था। रूबी दी के पति सुधीर इनको दिल की बीमारी होने से कई महीनों बिस्तर पर ही पड़े रहे। लेकिन उनकी बेटे गौरी को रूबी दी की समाजसेवा से क्षोभ रहता था। रूबी दी को लगता है कि - "उनके कहने के पीछे हो सकता है, व्यंग्य या क्षोभ रहा हो पर कही गहरा स्नेह भी था। लेकिन गौरी के कहने में खाली क्षोभ रहता था। तो क्या गौरी ने यह चीज सुधीर से ही ली थी? जो सुधीर नहीं कहा पाते थे, गौरी क्या वहीं

कहती रही थी?’<sup>1</sup> इस विचार से रूबी दी का मन हमेशा आशंका से भरा रहता। रूबी दी की दो बेटियाँ थी एक जया और दूसरी गौरी। लेकिन एक भी इनके पास नहीं थी।

रूबी दी की नातिन कादम्बरी इससे रूबी दी का बहुत लगाव था। कादम्बरी दिल्ली में रहती थी। वह पत्रकार थी। इन दोनों में हमेशा फोन पर बातें होती थी। इन दोनों में हमेशा एक माँ-बेटी में जिस प्रकार बातें होती है उसी प्रकार होती थी। रूबी दी सुकून मिलता था, इससे बातें करके। “नानी कहना ओल्ड फैशन हो गया क्या ? यह रूबी दी क्या होता है ?” “ओह नानी, क्या फर्क पडता है ? सभी तो तुमको कहते है।”<sup>2</sup> इस कादम्बरी और रूबी दी में अच्छा और मित्रताका नाता हमें दिखायी देता है। रूबी दी की स्वाभाविकता, बोलचाल, रहन-सहन आदि के बारे में हमें पता चलता है। रूबी दी ने ‘परामर्श संस्था’ में आयी एक लडकी सविता को अपने घर में पनाह दी थी। सविता एक ऐसी लडकी थी, जिसका इस दुनिया में कोई नहीं था। एक दिन रूबी दी अखबार में छपी खबर पढ़ती है और उसे जोर का धक्का लगता है। ‘एक लडकी की मृत्यु’ इस शीर्षक को देखकर रूबी दी ने वापस अखबार उठाया तो उस लडकी का नाम भी सविता था। “हे भगवान, जिसका डर था वही हुआ। ऐसे होने वाला था, तभी एक जवान लडकी की मौत का खयाल बार-बार उन्हें आ रहा था।”<sup>3</sup> रूबी दी ने पाठ-ध्यान छोडकर स्नान किया और हलका नाश्ता कर सुबह आठ बजे ही जहाँ सविता रहती थी, वहाँ चली गयी। एक कमरे में उस लडकी को देख रूबी गुप्ता को धक्का-सा लगता है। और अपने समाज सेवा को धिक्कारती है। उस लडकी की हालत को देखकर रूबी दी ने फैसला किया कि इसे अपने घर ले जाने का। और रूबी दी उस लडकी जिसका नाम सविता है, इसको घर ले जाती है। उस पर तरह-तरह के इलाज करती है। उसे पूरी तरह ठीक करने का जिम्मा लेती है।

इस तरह रूबी दी एक ऐसा पात्र है जो खुद अकेला है, पर अपने अकेलेपन को दूर रखकर औरों का अकेलापन दूर करना चाहता है। अपने असफल जीवन की कोई कद्र नहीं, अपने सेहत की कुछ भी परवाह न करते हुए रूबी दी परामर्श संस्था चलाती है। और अंत में अपनी सारी जायदाद सविता, सायरा और कादम्बरी के नाम करती है।

- 
1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ. 119
  2. वही, पृ. 13
  3. वही, पृ. 156

## 2. कादम्बरी :-

कादम्बरी यह 'शेष कादम्बरी' का दूसरा प्रमुख पात्र है। यह आधुनिक पात्र होने से इसमें आधुनिक जीवन जीने की अलगता दिखायी देती है। कादम्बरी जो रूबी दी की नातिन है। जो अपना कैरियर बनाने के लिए अपने माँ-बाप से दूर रहती है। और उसपर वहाँ के विदेशी संस्कार पनपने लगते हैं। कादम्बरी एक ऐसा पात्र है जो भारतीय संस्कार और विदेशी संस्कार को गहरायी से सोचने पर मजबूर करता है। कादम्बरी जो अपने माँ-बाप के खिलाफ पत्रकार बनना चाहती है। 'जो एक फ्रेंच-कट दाढ़ीवाले पत्रकार के साथ दिल्ली जैसी जगह में अकेली रह रही हो, वे नानी होने के नाते उसकी खबर लेती रहे।'<sup>1</sup> रूबी दी हमेशा कादम्बरी पर नजर रखती और उसके हर पहलू को जानना चाहती थी। क्योंकि वह अकेली दिल्ली में फ्रेंच कट दाढ़ीवाले के साथ रहती थी।

रूबी दी कादम्बरी को हमेशा उसकी अखबारी दुनिया के बारे में पूछती रहती है। कादम्बरी को हमेशा एक देश से दूसरे देश में जाना पड़ता था। इस भागदौड़ में भी वह रूबी दी से फोन पर बातें करती थी। इस प्रकार कादम्बरी एक ऐसा पात्र है जो रूबी दी और उसको अंत तक जोड़े रहता है। अंत में रूबी दी अपनी वसीयत में आधी जायदाद कादम्बरी के नाम कर देती है। और शेष कादम्बरी लिखने की जिम्मेदारी कादम्बरी पर छोड़ देती है।

## III) कोई बात नहीं :-

### 1. शशांक :-

'कोई बात नहीं' इस उपन्यास का प्रमुख पात्र शशांक है। शशांक सतरह साल का एक लड़का है जो दूसरों से अलग है क्योंकि वह दूसरों की तरह चल और बोल नहीं सकता। शशांक कोलकाता के एक नामी मिशनरी स्कूल में पढ़ते वक्त अपनी गैरबराबरी को जीते हुए, उसका साबिका उन तरह-तरह की दूसरी गैरबराबरियों से भी रहता है, जो हमारे समाज में आस-पास कुलबुलाती रहती है। स्कूल में शशांक का एक मात्र दोस्त है एक अंग्लो-इंडियन लड़का आर्थर सरकार, जो उसी की तरह एक किस्म का जाति-बाहर या आऊटकास्ट है - अलबत्ता बिल्कुल अलग कारणों से।

शशांक का जीवन चारों तरफ से तरह-तरह के कथा-किस्सों से घिरा है। एक तरफ उसकी आरती मौसी है, जिसकी प्रायः खेदपूर्वक वापस लौट आनेवाली कहानियों का अन्त और आरंभ शशांक को कभी समझ में नहीं आता। “उसने मौसी की लिखी कहानियाँ किस्से पढ़े हैं, हालाँकि वह ठीक-ठीक कभी समझ नहीं पाता कि मौसी उन कहानियों में कहना क्या चाहती है।”<sup>1</sup> दूसरी तरफ उसकी दादी की कहानियाँ हैं - दादी के अपने घुटन-भरे बीते जीवन की, बार-बार उन्हीं शब्दों और मुहावरों में दोहराई जाती कहानियाँ, जिनका कोई शब्द कभी अपनी जगह नहीं बदलता। शशांक को दादी की जीवन गाथाएँ याद आती हैं। जब दादी की शादी हुई थी। “पंद्रह साल की उमर में शादी होकर जो कमरा उसे दिया गया, वहाँ से चौके तक जाने के लिए बीच में पड़ता दादी के सास-ससुर का बड़ा कमरा। ----”<sup>2</sup> इस प्रकार की कहानियों से शशांक हमेशा अपना दिल बहलाता है।

लेकिन सबसे विचित्र कहानियाँ उस तक पहुँचती हैं जतीन दाद के मार्फत, जिसे वह बिना किसी और के जाने, हर शनिवार विक्टोरिया मेमोरियल के मैदान में मिलता है। “जीवन चांडाल से मैं पच्चीस साल पहले सिर्फ एक बार जेल में मिला था। तब से उसे कहाँ नहीं खोजा, पर आज तक नहीं मिला?”<sup>3</sup> इस प्रकार की आतंक और हिंसा से भरी कहानियाँ जतीन दा के मार्फत सुनता था। इन कहानियों को सुनकर शशांक हमेशा संदेह होता था, कि वे आत्मकथात्मक हैं, पर इस सन्देह के निराकरण का उसके पास कोई रास्ता नहीं है।

शशांक इस अजीब सी बीमारी को ठीक करने में उसकी माँ, स्कूल के हेडमास्टर, उसका दोस्त अमित इन्होंने कड़ी मेहनत की है। धीरे-धीरे वह ठीक हो रहा था। “स्कूल में पहला दिन, या कहना चाहिए, नये जन्म का पहला दिन। ठीक ट्रायल रन की तरह चाचा और अमित उसे क्लास में बेंच पर बिठा जाते हैं।”<sup>4</sup>

इस तरह शशांक इस उपन्यास में मुख्य कीरदार निभाता है।

- 
1. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृ. 7
  2. वही, पृ. 31
  3. वही, पृ. 67
  4. वही, पृ. 158

#### 4.3.3-2 गौण पात्र :-

##### 1. 'कलिकथा : वाया बाइपास' -

इस उपन्यास में गौण पात्रों में शांतनु है, जो सुभाषचंद्र बोस के विचारों से प्रभावित है, लेकिन स्वातंत्र्य मिलने के बाद सुभाष बाबू को आदर्श को भूल जाता है। दूसरा पात्र अमोलक गांधी एवं गांधीवाद का प्रतीक है और अन्य पात्रों में किशोर बाबू के परदादा - रामविलास, किशोर बाबू की पत्नी, किशोर बाबू का बेटा, बहू आदि का अंतर्भाव होता है।

##### 2. 'शेष कादम्बरी' -

इस उपन्यास में गौण पात्रों में सविता जिसका दुनिया में रुबी दी के सिवा कोई नहीं है। देदीदत्त मामा, सायरा, मनोरंजन व्यापारी, वासुमणि, डॉ. निवेदिता, प्रीति, मिसेस सूद, कालूकरण आदि पात्रों को गौण पात्रों में रखा जा सकता है।

##### 3. 'कोई बात नहीं' :-

इस उपन्यास में गौण पात्रों में दादी माँ, आरती मौसी, जतीन दा, फादर हेडमास्टर, किशोर की माँ, पापा, अमित, आर्थर आदि पात्र आते हैं।

#### 4.3.3-3 विशेषताएँ :-

प्रत्येक उपन्यासकार यह प्रयत्न करता है कि उसके पात्रों में कुछ ऐसी विशेषताएँ हो जिनके कारण पात्र दीर्घ समय तक पाठकों की स्मृति में रह सके। विभिन्न समीक्षकों ने चरित्र-चित्रण की निम्नांकित विशेषताएँ स्वीकार की हैं -

1. **स्वाभाविकता** :- चरित्र-चित्रण में स्वाभाविकता उपन्यास का प्राण है। नाटक किसी पात्र की अनुभूति के प्रति तभी संवेदना रख सकेगा, जब उसकी परिस्थिति उसे विश्वसनीय प्रतीत होगी।
2. **अनुकूलता** :- इसके अनुसार पात्र का निर्माण विषयवस्तु के अनुकूल होना चाहिए।
3. **वैयक्तिकता** :- पात्रों की वैयक्तिक विशेषताओं के कारण एक वर्ग के पात्रों में भी अंतर दृष्टिगत होता है। पात्र का निजी चरित्र, व्यक्तित्व उद्घाटित होता है। अतः उपन्यास में पात्रों की वैयक्तिकता अक्षुण्ण रहनी चाहिए।
4. **मौलिकता** :- प्रत्येक पात्र के व्यवहार, विचार और आदर्श में मौलिकता का होना अनिवार्य है।

5. **सजीवता :-** पात्र सजीव तथा सशक्त हो। उसके चरित्र का विकास अनायास हो। वह संघर्षशील होना चाहिए।
6. **गुणात्मक प्रधानता :-** उपन्यासों में पात्रों को अधिक से अधिक मानवीय गुणों से संयन्त होना चाहिए।

#### 4.4 संवाद या कथोपकथन :-

##### 4.4.1 संवाद परिभाषा एवं स्वरूप :-

उपन्यास शिल्प में संवाद या कथोपकथन का विशिष्ट स्थान है। संवाद से उपन्यास के शिल्प में सुन्दरता, स्वाभाविकता तथा नाटकीयता समाहित होती है। “कथोपकथन का संबंध कथावस्तु और पात्र दोनों से होता है। कथोपकथन कथावस्तु को आगे बढ़ाते हैं और पात्रों का चरित्र उद्घाटित करते हैं।”<sup>1</sup>

कथोपकथन की कुछ विशेषताएँ भी मानी जाती हैं - स्वाभाविकता, सजीवता, रोचकता, संक्षिप्तता, मार्मिकता, व्यंजनात्मकता आदि। इन विशेषताओं द्वारा (वार्तालाप) कथोपकथन प्रभावी बनते हैं।

संवाद या कथोपकथन उपन्यास के शिल्प विधान में एक मुख्य भूमिका निभाते हैं। “लेखक अपनी ओर से केवल पात्रों का वर्णन करता जाय, तो पाठक निश्चित रूप से ऊब का अनुभव करते हैं, किन्तु जब वह संवादों के पात्रों के तेवर को प्रस्तुत करता है, तब वे आकर्षक सशक्त एवं स्वाभाविक गति प्राप्त करते हैं।”<sup>2</sup> यद्यपि संवादों का उपयोग कोई अनिवार्य तत्त्व नहीं है, किन्तु इसके द्वारा हम उपन्यास को अधिक स्वाभाविक एवं यथार्थ बना सकते हैं।

उपन्यास की स्वाभाविकता का आधार उसके संवाद ही होते हैं। उपन्यास के शिल्प विधान के अंतर्गत संवाद निम्नलिखित कार्य करते हैं -

1. लम्बे-लम्बे वर्णन के बजाय कथाकार पात्रों के संवादों के द्वारा कथानक को गति और विकास प्रदान करता है। इस युक्ति से उपन्यास में तीव्रता के साथ और अपने वास्तविक रूप में प्रकट होती है।

1. पी. वी. कोटमे - श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्प विधान, पृ. 59

2. डॉ. प्रदीपकुमार शर्मा - हिंदी उपन्यासों का शिल्प विधान, पृ. 66

2. क्या वर्णन में पाठक का तादात्म्य लेखक से होता है, किंतु संवादों के द्वारा वह पाठकों से सीधा साक्षात्कार करता है। उन दोनों के बीच से लेखक का हस्तक्षेप हट जाता है। स्वयं लेखक भी संवादों के द्वारा पात्रों को आसानी से और सशक्त रूप में व्यक्त कर सकते हैं।
3. संवादों के उपयोग से पात्र अपने स्वाभाविक एवं सहज रूप में प्रकट होते हैं। समाज में उनका जैसा स्थान होता है उनको उसी रूप में उपस्थित किया जाता है।

इस प्रकार के कार्य संवाद शिल्पविधान के अंतर्गत आते हैं।

#### 4.4.2 आलोच्य उपन्यासों में संवादों का चित्रण :-

##### 1. 'कलिकथा : वाया बाइपास' -

उपन्यास में सप्राणता लाने के लिए संवाद महत्त्वपूर्ण है। उपन्यास में संवाद संक्षिप्त तथा रोचक जिज्ञासावर्धक है। प्रस्तुत उपन्यास में किशोर बाबू की पुरानी पीढ़ी कैसे व्यवहार करती थी यह बताते समय संवाद प्रभावपूर्ण बन जाते हैं। अपने परिवार का इतिहास बताते समय किशोर बाबू कहते हैं -

“तुम्हारे दादाजी का नाम मालूम है न तुम्हें ?”

लडका मूँह फुलाकर कहता है - “हाँ भुरामलजी”

“उनके पिता का नाम”

“नहीं मालूम ?”

“मैं बताता हूँ - केदारनाथजी, उनके पिता राम विलास जी उनके पिता का घमंडी लालजी।”<sup>1</sup>

यह संवाद जिज्ञासा पैदा करता है।

अलकाजी ने डॉक्टर और किशोर बाबू के बीच के संवाद को आज के राजनीतिक हालात को सामने लाया है -

“बताइए राबडी देवी और सोनिया गांधी में क्या अंतर है ?” किशोर बाबू ने पूछा।

“यू नो किशोर बाबू, मैं पिछली बार विदेश में था, तो देवेगौडा को अपने देश का प्रधानमंत्री बताते भी शर्म आती थी।”<sup>2</sup>

1. अलका सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास, पृ. 199

2. वही, पृ. 183

किशोर बाबू का सबसे अच्छा दोस्त शांतनु । इसके संवादों से अलकाजी ने हमारे सामने एक मिसाल बतायी है कि आजादी का जोश किस तरह होता है। शांतनु सुभाषचंद्र बोस का भक्त है। शांतनु हमेशा टाऊन हॉल में अपने पाडे (मुहल्ले) के किसी दोस्त के साथ सुभाष बाबू की नभा में जाता था। सुभाष बाबू की छवि इस तरह समाई हुई है कि उनका नाम लेते ही शांतनु उत्तेजित हो जाता है।

“अहिंसा के रास्ते पर चलकर कभी आजादी हासिल नहीं की जा सकती। आधुनिक विज्ञान के युग में गांधीजी कहां से ये पुराने घिसे-पिटे सिद्धांतों को ले आए हैं, जिनके कारण ही भारत सदियों से गुलाम रहा है।”<sup>1</sup>

इसके विपरित अमोलक भी गांधी भक्त है। वह कहता है कि, “गांधीजी का अहिंसा और सत्याग्रह का मार्ग कायरों की कायरता छिपाने की नीति नहीं है, जैसा कि गांधीजी के विरोधी समझते हैं, बल्कि वह बहुत गहरी आत्मिक शक्ति का मार्ग है।”<sup>2</sup>

इस प्रकार इन दोनों सुभाष भक्त और गांधी भक्त के जरिए अलका जी आजादी के सपनों को ताजा करती है, किस तरह इन्होंने आजादी पाने के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

## 2. 'शेष कादम्बरी' -

प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों के संवाद बड़े मार्मिक और रोचक लगते हैं। प्रमुख पात्र रूबी दी के संवादों से अपनापन, दूसरों के प्रति लगाव, दूसरों को मदद करने की प्रवृत्ति झलकती है। अलका जी ने प्रस्तुत उपन्यास में रूबी दी और कादम्बरी के फोन पर के कथन से यह स्पष्ट किया है कि उनमें एक-दूसरे के प्रति कितना लगाव और अपनापन है -

“क्या हुआ नानी, तुम बोलती क्यों नहीं ? तबीयत पानी ठीक है न?”

“मैं बिलकुल ठीक हूँ।”

“आप नहीं कहेंगी, तो मैं कैसे जानूंगी - अगर दिल में प्रेम है, तो कह दो।”

“यह भी कोई बात है, कादम्बरी !

तुम्हारे आने से तो मैं तुम्हें देखते ही एकदम ठीक हो जाऊँगी। तुम जब चाहो, आ जाओ।”<sup>3</sup>

1. अलका सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास, पृ. 94

2. वही, पृ. 93

3. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ. 134



इससे एक दूसरे में अपनेपन की झलक दिखायी देती है। रूबी दी और उनकी बेटा गौरी के बीच संवाद से माँ-बेटी में जो दूरियाँ थी उसका इस संवाद से पता चलता है।

“तुमने मुझे कभी प्रेम ही नहीं किया, क्योंकि मैं पापा की तरह साँवली थी। मुझे माँ का प्रेम नहीं मिला।”<sup>1</sup>

इस रूबी दी के बेटा ने अपनी माँ पर जो आक्षेप लगाए थे, उससे रूबी दी तिलमिला जाती है। इस प्रकार पात्रों के चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालनेवाले यह संवाद है।

### 3. कोई बात नहीं :-

प्रस्तुत उपन्यास में दादी के संवादों में बड़ी रोचकता दिखायी देती है। कहानियाँ मुहावरों और कहावतों से भरी हुई हैं। दादी का प्यार उसका विश्वास सबकुछ शशांक है। जब शशांक बीमार पड़ता है तब दादी एकदम से टूट जाती है।

“क्या सुनना चाहते हो, मेरे प्यारे ? मेरे चाँद। मेरे सूरज। मेरी आँखों के तारे : तुम बीमार क्यों पड़े, मैं तो सारी कहानियाँ भूल गई। तुम सोचते होंगे कि दादी मेरे पास आती नहीं, बैठती नहीं....” “पर बेटा, मेरी तो साँस-साँस में तुम थे।”<sup>2</sup>

इस संवाद से दादी का शशांक के प्रति प्यार उभरता दिखायी देता है।

शशांक की माँ की शशांक को ठीक करने की लड़ाई पहले पाडाव पर थी। हर वक्त शशांक को ठीक करने में लग जाती है। उसने जैसे ठान लिया था कि शशांक को छह महीने में एकदम ठीक कर देगी। माँ शशांक से कहती है कि - “तुम क्या सोचते हो कि तुम ऐसे ही घर में पड़े रहोगे? तुम भी जल्दी स्कूल जाओगे।”<sup>3</sup>

### निष्कर्ष :-

1. ‘कलिकथा : वाया बाइपास’, ‘शेष कादम्बरी’ और ‘कोई बात नहीं’ के संवाद संक्षिप्त, पात्रानुकूल तथा प्रसंगानुकूल है।
2. आलोच्य उपन्यासों के संवाद रोचक, सुमधुर, बोधपूर्ण तथा स्वाभाविक लगते हैं।

1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ. 108
2. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृ. 162, 163
3. वही, पृ. 151

3. आलोच्य उपन्यासों के संवाद बहुत सारे बोधात्मक सिद्ध होते हैं।
4. अलकाजी ने अपने उपन्यासों में आधुनिक युग को जो बोध दिया है वह अपने पात्रों के जरिए हम तक पहुँचाने की कोशिश की है।
5. उपन्यासों में अलका जी संवादों के जरिए आधुनिक थेरेपी, सर्जरी, टेस्ट ट्यूब बेबी जैसे आधुनिक तंत्रों को लोगों के सामने लाने की कोशिश की है।

#### 4.5 भाषा शैली :-

##### 4.5.1 भाषा का स्वरूप :-

कहा जाता है कि, “भाव-विधान साहित्य की आत्मा को व्यंजित करता है तो शिल्प-विधान शरीर। शिल्प विधान के अंतर्गत शैली और भाषा के भिन्न-भिन्न रूप आ जाते हैं।”<sup>1</sup>

“भाषा शब्द और अर्थ संयोग के आकार ग्रहण करती है। ‘शब्द’ उसका ‘शरीर’ और ‘अर्थ’ उसकी ‘आत्मा’ कही जायेगी।”<sup>2</sup> उसका मूल कार्य संप्रेषण है। स्पष्ट है कि भाषा - संप्रेषण व्यवस्था है जिसका सीधा संबंध संरचना से होता है। ‘संरचना’ से संप्रेषण संभव है।

भाषा संरचना का स्वरूप स्पष्ट करते हुए डॉ. रामप्रकाशजी ने कहा है कि - “किसी शब्द, पद बंध या वाक्य की सार्थक इकाइयों में निहित सम्बन्धों तथा व्याकरणिक नियमों पर आधारित व्यवस्था भाषिक संरचना कहलाती है।”<sup>3</sup> स्पष्ट है भाषा संरचना का अभिप्राय है, उसकी अभिव्यक्ति की संरचना अर्थात् शब्द संरचना। यह भाषा के रूप की संरचना है। इन्हीं शब्दों के समूह से वाक्य बनता है।

##### 4.5.2 शब्दप्रयोग के विभिन्न रूप :-

अलका सरावगी के उपन्यासों में शब्दों के विविध स्वरूपों का विधान भाषा में सौन्दर्य लाने के लिए विविध उपकरणों का उपयोग, मुहावरों और कहावतों की समन्विति, वाक्यों की कलात्मक योजना तथा भाषा की युगानुरूप अभिव्यक्ति आदि के कारण अलका सरावगी के उपन्यासों की भाषा सहजता और सौंदर्य की प्रभोज्वलता अनायास ही परिलक्षित होती है।

1. डॉ. पांडुरंग पाटील - देवेश ठाकूर और उनका उपन्यास साहित्य, पृ. 193
2. पी. वी. कोटमे - श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्पविधान, पृ. 201
3. वही, पृ.201

अपने कृतियों में सहजता लाने के लिए रचनाकार विश्वभर की विविध भाषाओं का प्रयोग किया है। अलका जी ने अपने उपन्यासों में अरबी, फारसी, अंग्रेजी, बांगला आदि भाषाओं का सहज प्रयोग किया है।

#### 4.5.2-1 अरबी शब्द :-

जिद, रकम, जिबह, औरत, कलेजा, हवेली बेहरे<sup>1</sup>, निगाह, कागज, डकैती, मुसकराहट, अमीर, किताब, गरिमा, बर्षद, अखबार, मुखौटा, ताल्लुकात, मकान, लाश, दवा, आशियाना, खामोश<sup>2</sup>, तालाब, सुलूक, दिक्कत, अजनबी, बेशक, शुक्रअदायगी, तस्वीरे, दीवारों, शार्मिदगी, कारोबार, फिक्र, बरस, दहेज, रईसी, बरामदा, खुशमिजाज, कगार, दीये, कूडापन, दुनिया।<sup>3</sup>

#### 4.5.2-2 संस्कृत के तत्सम शब्द :-

आचमन, अर्थी, रक्त-संचार, कृतज्ञता, पुस्तकालय, निष्पाप, जन्म, आकांक्षा, हिंसा, राजनीति, प्रतीक्षा, पुण्य संतान, आकाश, धन्यवाद।<sup>4</sup> अभद्र, कार्यकुशल, स्मृति, हस्तरेखा, सम्पत्ति, कलम, अन्तराल, बहुमूल्य, अनुमान, स्थितप्रज्ञता, अनिच्छा, अप्रत्याशीत, महाराज, उद्वेलित, स्मृति, समय, सुगंध, अदम्या, प्रेम, उम्र, अद्भूत, द्वार, योगवशिष्ठ, आशीर्वाद, भृगुसंहिता, संपत्ति, नमोशूद्र, सूरज, विचित्र, जिजीविषा, यातना आदि।<sup>5</sup>

#### 4.5.2-3 अंग्रेजी शब्द :-

टेलिग्राफ, टीचर, ट्यूशन, ऑपरेशन, वार्ड, स्ट्रेचर, स्कूल, ट्रैप, ब्रेक, पोस्टर, प्रिंस, लायब्रेरी, रजिस्टर, मार्केट, टाइफाइड, पार्टनर, टेरेरिस्ट, डिझाइन, ग्रिल, कटिंग, बाइपास सर्जरी, रूल, डायरी, स्टेशन, फुटपाथ, सिविल सर्विंस, कॉरपोरेशन, ब्यूटी सेलून, पार्लियामेंट, क्लब, रिस्क, माचिस, गर्वमेंट, लोन, फ्रीडम, पेमेंट, डिपार्टमेंट, पसेंट, फिक्स्ड, सरप्राइज, बिजनेस, सिक्योरिटी, टॉकिंग, फैक्टरी<sup>6</sup>, कौलेज, युनिवर्सिटी, इमरजेंसी, फैशन, ग्लोबलाइजेशन, ग्रेट, डिलीवरी, हाफ पैंट, क्लिनिक, मल्टीस्टोरीड, रेस, ट्रेनिंग, आडेंटिटी, क्राइसिस, कनवर्ट, पोस्टमार्टम, ज्योग्राफी, इनजॉय, डैजर्ट, नैचुरोपैथी, बेंच, प्रेसीडेंसी, कास्ट, सिस्टम, जस्टिस, ब्लैक बोर्ड, चौक, नॉर्मल,

- 
1. अलका सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास
  2. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी
  3. अलका सरावगी - कोई बात नहीं
  4. अलका सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास
  5. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी
  6. अलका सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास

एडवांस, सेलेरी, फिलॉसफी, लिफ्ट, पोलिएस्टर, क्रिकेट, मैटस, यूथफुल, टीचर, चैप्टर, टेस्ट, हिस्ट्री, एनोनिमिटी, आर्गेनिक, नीड, बायोलॉजी, इमैजिन, डाक्यूमेंटरी, फ्रेम, प्रॉब्लम, एक्स्ट्रा, मेंटल, रिटार्डेशन, ब्रीफकेस, फिजियोथरेपिस्ट, एक्सरसाइज, सेंट्रल, सिजेरियन, एंट्रेस, टेस्ट।<sup>1</sup> गिफ्ट, स्ट्रीट, कार्डियोग्राम, अनफोरचुनेट, सिरियसली, स्केप, बुक, कैमरा मैन, ड्राफ्ट, एडवरटाइजिंग, एजेंसी, मैनेजर, स्टेशन, स्युडो, थिएटर, स्टेन्ड, ग्लास, फिक्सिंग, एडवांस, ट्रे, लेटर बॉक्स।<sup>2</sup>

#### 4.5.2.4 मुहावरे (रूढोक्ति) :-

मुहावरा कुछ पदों का समूह होता है, जिसका वाच्यार्थ से भिन्न केवल लाक्षणिक अर्थ देनेवाला वाक्यांश ही मुहावरा कहलाता है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा का सौंदर्य अधिक बढ़ जाता है। उसमें चटपटाहट या लावण्य आ जाता है।

अलका सरावगी जी ने अपने उपन्यासों की भाषा का सौंदर्य बढ़ाने के लिए तथा उसमें अर्थ को गहराई देने के लिए मुहावरों का अधिकाधिक प्रयोग किया, जिनमें से कतिपय मुहावरे निम्नानुसार हैं -

उद्विग्न होना। (पृ.26)

वैराग्य लेना। (पृ.32)

हृदय अर्पित करना। (पृ.134)

पेट आग लील जाना। (पृ. 144)

भौंचक्का रह जाना। (पृ. 153) (कलिकथा : वाया बाइपास)

पिटी हुई निगाहों से देखना। (पृ. 6)

आँखों में पानी आना। (पृ.26)

नींद उचटना। (पृ. 28)

आसमान से टपकना। (पृ.29)

झमेला खडा करना। (पृ. 40)

जार-जार रोना। (पृ. 40)

- 
1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी
  2. अलका सरावगी - कोई बात नहीं

व्याकुल होना। (पृ. 43)

हुडक लगना। (पृ. 54)

अचंभित होना। (पृ. 13) (शेष कादम्बरी)

राहत की साँस लेना। (पृ. 41)

मौत की कगार पर खड़े होना। (पृ. 48)

हक्का - बक्का होना। (पृ. 68)

टिमगा चकर घिन्नी होना। (पृ. 73) (कोई बात नहीं)

#### 4.5.2.5 कहावत (लोकोक्ति) :-

मुहावरों के समान कहावते भी भाषा की अभिव्यंजना शक्ति और सौन्दर्य को बढ़ाती है। लेखक कहावतों का प्रयोग करने के लिए एक से अधिक वाक्यों की रचना करते हैं।

डॉ. रामप्रकाश जी के मतानुसार - “ऐसे लोक-कथन जो व्यवहार परंपरा में रूढ़ हो जाने के कारण भाषिक अभिव्यंजना का स्थायी उपकरण बन जाते हैं, लोकोक्ति कहलाते हैं।”<sup>1</sup> उसमें ऐसा युग सत्य निहित रहता है, जिसे हर देश-काल का समाज स्वीकार करता है।

“रूप्यों होवे रोकडो सोरो आवे सास संपत होय  
जो घर भलों नाहीं भलो परदेस।”

(कलिकथा : वाया बाइपास, पृ.30)

“चांदी बरगे (जैसे) भात सोने  
बरगी दाल, गिलौरी बरगे फुलके (रोटी)”

(कलिकथा : वाया बाइपास, पृ.36)

“मोर नाचता है, पर अपने पैरों को देखकर रो पडता है।”

(कलिकथा : वाया बाइपास, पृ.96)

“स्त्री और पुरुष में घी और आग का संबंध होता है।”

(कलिकथा : वाया बाइपास, पृ.201)

---

1. डॉ. सक्सेना उषा - हिंदी उपन्यास का शिल्पगत विकास, पृ. 12

#### 4.5.2.6 लोकगीत :-

लोकगीत अपने देश की सांस्कृतिक देन है। इस उपन्यास में अलका जी ने लोकगीतों का सहज प्रयोग किया है। अनेक बंगला, मारवाडी लोकगीत हमें यहाँ दृष्टिगोचर होते हैं।

‘डेडरियों करे डरू डरू  
पालन पाणी भरू भरू  
आधीरात री तलाई नेष्टेई नेष्टे।’ (पृ. 28)

‘चानन भेल विषय सररे  
भूषन भेल मारी  
अज हू - हरि माहि आयल रे  
गोकुल गिरधारी ।’ (पृ. 135)

‘मेहंदी मोल की रे  
ऐ जी मेहंदी राची म्हारे हाथ  
म्हारो बन्नो बस्यो है, दूर, सहेली  
कुण निरखे म्हारा हाथ ?’ (पृ. 119)

‘आडाली धानेर चिउड़ा, बिन्नी धानेर खाई  
फोडितपुरा पाटाली गुंड, सिलिमपुरा दोई  
ओ बंधु, जाइयो आमार बाडी  
तोमार लाइका भाइजा तोइरी  
आउस धाने मूडी।’ (पृ. 127)

‘तुमि बंधु आइया बोला रे  
ओ बंधु आमार फूल बागाने  
बेल चम्पा फूटे रोये छे एखाने शेखाने  
बंधु, जाइयो आमार बाडी ---- ’ (पृ. 129)

‘छन्दे छन्दे दुलि आनंद आमि बनफूल गो’ (पृ. 142)

(‘कलिकथा : वाया बाइपास’)

‘क्व नु त्वं कितवाञ्छित्वा वस्त्रार्धम् प्रस्थितो मम।  
उत्सृज्य विपिने सुप्तामनुरक्तामं प्रियाम् प्रियम्॥’ (पृ. 187)

(‘कोई बात नहीं’)

‘आमार सोनार बांग्ला, आमि तोमाय भालोबाशी।’

(‘शेष कादम्बरी’) (पृ. 124)

#### 4.5.2.7 सूक्ति :-

सूक्ति का अर्थ है, ‘उचित उक्ति, सुन्दर अथवा चमत्कारपूर्ण वाक्य’ आदि। हिंदी साहित्य कोश के अनुसार - रचनाकार “वह मानव प्रकृति को उसके विभिन्न सामाजिक और आध्यात्मिक संबंधों में समझता-बूझता है। जब उसके मानस में किसी संबंध का एक विशेष कोश सामने आता है तो उसे बहुत कुछ निष्कर्षात्मक रूप में सामने रखता है।”<sup>1</sup> उसे सूक्ति कह सकते हैं। इनमें जो बहुत ही सुंदर और नैतिकतापूर्ण सूक्तियाँ होती हैं; उन्हें सुभाषित कहा जाता है।

हिंदी में तुलसी, रहीम, वृन्द, दीनदयाल गिरी, गिरिधर आदि अनेक प्रौढ सूक्तिकार हुए हैं। उपन्यासकार अलका सरावगी जी ने अपने जीवन-अनुभवों का सार सूक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

“मरने के भय से आदमी मौत के पहले ही मर जाता है और  
मरा हुआ आदमी उत्साह, खुशी कृतज्ञता कैसे अनुभव कर सकता है।”

(कलिकथा : वाया बाइपास, पृ.150)

“हम अपने इतिहास को मिटा नहीं सकते। इसलिए उसपर  
हमें शर्म या ग्लानि महसूस नहीं करनी चाहिए।”

(कलिकथा : वाया बाइपास, पृ.150)

“हम जो बनाते हैं, वह हमारे अंदर पहले बना होता है।”

(शेष कादम्बरी, पृ. 118)

“वही धन्य है, जो अनुभव करता है कि वह धन्य है।”

(शेष कादम्बरी, पृ.120)

“हम जब तक अपनों के अलावा किसी से प्रेम नहीं करते,  
तब तक हम प्रेम का अर्थ नहीं जान सकते।”

(शेष कादम्बरी, पृ. 130)

“मरे हुए आदमी को चार ऐसे कंधे तो मिलने चाहिए,  
जिनसे उसका जीवन में किसी तरह का जुड़ाव रहा हो।”

(कोई बात नहीं, पृ. 11)

“आदमी का मन एक गाँव है, जिसमें वही एक अकेला नहीं रहता।”

(कोई बात नहीं, पृ. 16)

“दुख-दुख है। हम इस बात को मान लें और उसके साथ  
जीना सीख लें, तो सारी ‘प्रॉब्लम’ खत्म। फिर आदमी  
को भगवान की भी जरूरत नहीं रह जाती। असल में  
जिंदगी आदमी तभी जीना शुरू करता है।”

(कोई बात नहीं, पृ. 33)

#### 4.5.2.8 साहित्यिक काव्य पंक्तियों का प्रयोग :-

अलाकाजी ने अपने उपन्यासों को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए भक्तिकालीन एवं आधुनिक कालीन प्रमुख कवियों के काव्य पंक्तियों का सहज प्रयोग किया है।

अ) “सुखिया सब संसार है, खावे और सोवे

दुखिया दास कबिर है, जागे और रोवे।” - कबीर, पृ. 206

(कलिकथा : वाया बाइपास)

ब) “जैसे उड़ी जहाज के पंछि पुनि जहार पर आवे।” - सूरदास, पृ. 208

(कलिकथा : वाया बाइपास)

क) “वस्तु अमोलक दो मेरे सब सतगुरु।

किरण कर अपनाये।”

- मीराबाई, पृ. 181

(कलिकथा : वाया बाइपास)



- ड) “अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी  
आँचल में दूध है और आँखों में पानी।” - मैथिलीशरण गुप्त  
(कलिकथा : वाया बाइपास)
- अ) “जल में उतपति, जल में बासा  
जल में नलिनी, तोर निबासा ... ।” - कबीर, पृ. 7  
(कोई बात नहीं)

#### 4.5.3 आलोच्य उपन्यासों में चित्रित भाषा :-

आलोच्य उपन्यासों की भाषा इतनी सरल, सहज, तरलता एवं ऋतुजा से युक्त है कि यह कई तरह के आस्वाद देती है। इसकी एकता कहीं भी टूटती नहीं। इतिहास के प्रसंगों को बयान करते समय वह कहीं भी बोझिल नहीं होती। प्रेम प्रसंगों के दौरान शिथिल कोमलकांत पदावली के समान लालित्य भी उत्पन्न करती है। “क्या सुनना चाहते हो, मेरे प्यारे? मेरे चाँद। मेरे सूरज। मेरी आँखों के तारे। तुम बीमार क्या पड़े, मैं तो सारी कहानियाँ भूल गई।”<sup>1</sup> कविता की भाषा से प्रभावित होने के कारण इस उपन्यासों की भाषा रसात्मक हो गई है। “हम आपका सिजदा करते, हे करुणामय। ऐ जीवन, काल, भाग्य के विधाता। ऐ बहती हवाओं, समुद्रों के मालिक, या हमीद, या हफीज।”<sup>2</sup> इस तरह की पंक्तियों से उपन्यासों में रोचकता आ गई है। इसी प्रकार अपने पति के विरह में पत्नी की भावनाएँ व्यक्त करने के अंदाज से उपन्यासों में आकर्षकता बढ़ती है - “आंखडियाँ झाँई पडी, पंथ निहारि-निहारि, जीभडियाँ छाला पड्या, आया नहीं गिरधारी।”<sup>3</sup>

जब कोई अपने देस बहुत दिनों से आता है तो उसे अपने गाँव में जो बचपन बिताया था उसकी याद आती है।

“मरूधर म्हारो देस, म्हाने प्यारा लागे जी  
धोला-धोला टीवडा जी, उजली निरमल रेत  
चमचम चमके चांदनी में, ज्युं चादी रा खेत  
म्हाने प्यारा लागे जी .....।”<sup>4</sup>

- 
1. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृ. 162
  2. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ. 86
  3. अलका सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास, पृ. 29
  4. वही, पृ. 34.

इन पंक्तियों से 'कलिकथा : वाया बाइपास' में चित्रित अलग-अलग भाषाओं का ज्ञान होता है। इसमें से अलगता, नयापन दिखायी देता है। अलका जी ने अपने उपन्यासों में मारवाडी पदों का उपयोग करके कथाओं को अधिक रोचक बना दिया है।

#### 4.5.4 शैली का स्वरूप :-

अंग्रेजी का स्टाईल (Style) के अनुवाद के रूप में 'शैली' का प्रयोग हिंदी में होता है, जिसका अर्थ अभिव्यक्ति की पद्धति के रूप में लिया जाता है। "शैली ही काव्य का प्राण तत्त्व है।"<sup>1</sup>  
 "साहित्य की यह विधा आधुनिक युग की आम जनता की सशक्त वाणी है।"<sup>2</sup>

आधुनिक युग की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी विधि शैली है, जो प्राचीन वस्तु को नवीन परिवेश में प्रस्तुत कर सकती है।

डॉ. विद्या निवास मिश्र, "शैली का रीति से संबंध, विशिष्ट पद रचना रीति से जोड़ते है।"<sup>3</sup>

रीति और शैली का वस्तु रूप एक ही है। आरंभ में भारत और यूरोप दोनों के काव्यशास्त्रों में मुख्यतः वस्तु-रूप का ही विवेचन हुआ है। "आधुनिक काल में किसी लेखक या कवि की शब्द योजना, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्यों की बनावट आदि के संयुक्त भाषा रूप एवं भाषा पद्धति को शैली कहा जाता है।"<sup>4</sup>

उपन्यास में 'शैली' का वहीं स्थान है जो मनुष्य में उसकी आकृति और वेश-भूषा का है। 'शैली' के निम्नांकित गुण हैं - आकर्षता, रोचकता, सरलता और प्रवाहपूर्णता।

अलका जी ने अपने उपन्यासों में कथ्य की मांग के अनुसार विविध शैलियों का प्रयोग किया है।

#### 4.5.4-1 वाचक शैली :-

अलका जी ने अपने उपन्यासों में वाचक शैली का सहज प्रयोग किया है। 'कलिकथा : वाया बाइपास' के नायक किशोर बाबू की पत्नी किशोर बाबू द्वारा लिखित चिट्ठियाँ चोरी से पढ़ती है। जिसमें कोलकाता शहर के यथार्थ का वर्णन किया है।

- 
1. पी. वी. कोटमे - श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्पविधान, पृ. 222
  2. डॉ. पांडुरंग पाटील - देवेश ठाकूर और उनका उपन्यास साहित्य, पृ. 202
  3. डॉ. सिंह त्रिभुवन - हिंदी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग, पृ. 20
  4. पी. वी. कोटमे - श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्पविधान, पृ. 223

‘शेष कादम्बरी’ का प्रारंभ ही वाचक शैली से हुआ है। इस उपन्यास की प्रमुख पात्र रूबी दी एक आवेदन को पढ़ रही है और पढ़ते-पढ़ते उस लड़की का अंदाजा लगा रही है।

“मैं, मुसद्दी लाल, वल्द कन्हार्ई लाल, उम्र तिरपन वर्ष, धर्म से हिन्दू, व्यवसायी, 108 बी, चक्रबेरिया लेन, कलकत्ता - 20 का रहनेवाला ....”<sup>1</sup> इस आवेदन से उपन्यास की शुरुआत अलका सरावगी ने की है। इससे उपन्यास में अलगता, और आगे उपन्यास में रोचकता बढ़ती जाती है। कादम्बरी में जो रपट रूबी दी को भिजवायी थी। वह पढ़ने पर देवीदत्त मामा की सारी बातें उस रपट से पता चलती है। “बम्बइया फिल्मों के बारे में बाद के दिनों में देवी दत्त की एक अपनी थिसिस बन गई थी। देवीदत्ता का मानना था कि महात्मा गांधी के बाद किसी ने इतने बड़े पैमाने पर जनमानस को प्रभावित किया, तो बम्बइया फिल्मों ने ही।”<sup>2</sup> इससे पता चलता है कि अलका जी ने अपने उपन्यासों में वाचक शैली का बखूबी से उपयोग किया है। वाचक शैली से उपन्यासों में उस पात्र के विचार, सोच हमारे सामने आते हैं। वह पात्र किस प्रकार का है या किन चीजों का मोहताज है, यह मालूम पड़ता है।

#### 4.5.4-2 विवरणात्मक शैली :-

हिंदी उपन्यासों के प्रारंभ से इस शैली का प्रयोग होता आ रहा है। यह शैली परम्परागत है। इस शैली में किसी भी दृश्य या पात्रों का सरल तथा सीधे-सादे ढंग से वर्णन किया जाता है। यह शैली सर्वाधिक प्रयुक्त होती है और बहुत आम एवं प्रचलित भी है। इसमें इतिहास का भी वर्णन होता है, विषय विस्तार व बात को आगे बढ़ाने के लिए भी विवरणात्मक शैली का प्रयोग होता है। विवरणात्मक शैली को ही वर्णनात्मक शैली कहा जाता है। इसमें अपनी ओर से कहने या कुछ भी कहने की स्वतंत्रता होती है। यही इसकी महत्ता है। यहीं इसकी सीमा भी है।

अलकाजी ने ‘कलिकथा : वाया बाइपास’ में कोलकाता शहर का वर्णन बहुत ही मार्मिक ढंग से किया है। रामविलास बाबू अपने चिठ्ठियों में कोलकाता का वर्णन कुछ इस प्रकार करते हैं। कोलकाता में जब सावन की ऋतु आती है - “कोलकाता के सावन के आगे देस का सावन कुछ नहीं।” “खेतों में हरी घास बिछ जाती। ऊँचे वृक्षों पर बड़े-बड़े झूले डाल दिए जाते। सावन के गीत घर-घर सुनाई देने लगते हैं।”<sup>3</sup> प्राकृतिक आपदा का वर्णन कुछ खास बन गया है - “अचानक

- 
1. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ. 5
  2. वही, पृ. 171
  3. अलगा सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास, पृ. 32

संसार में प्रकृति के पांचो तत्त्व, मिट्टी, जल, आग, आकाश और हवा-गडबडा गए। और इसका प्रभाव सबसे पहले दुनिया के सब से ताकतवर देश में दिखाई पडा।”<sup>1</sup>

#### 4.5.4-3 आत्मकथनात्मक शैली :-

आत्मकथनात्मक शिल्प में कोई पात्र या लेखक ‘मैं’ शैली में अपनी बात कहता है। यह आत्मकथा या आत्मचरित्र जैसा होता है। इसमें लेखक का उस पात्र के साथ पूर्ण तादात्म्य होता है। विश्वसनीयता के लिए यह शिल्प बहुत कारगर है। व्यक्तिद्वारा स्वयं अपनी कहानी कहने में सत्यता व विश्व प्रामाणिकता के लिए शंका की गुंजाइश नहीं रह जाती।

परंतु इसमें कहनेवाले पात्र के दायित्व व चुनौतियाँ बहुत अधिक होती है। उसे अपनी कमजोरियों को बताने का साहस न हुआ, तो चरित्र इकहरा व झुठा हो जायेगा। अलकाजी के ‘कलिकथा : वाया बाइपास’ में आत्मकथनात्मक शैली की अधिकता मिलती है। उपन्यास का नायक किशोर बाबू और उनकी पत्नी इ. पात्र अपने अंतर मन से बातें करते रहते हैं। इस आत्मालाप को दशानि के लिए लेखिका ने इस शैली का सहज प्रयोग किया है। किशोर बाबू के हृदय में अमोलक के आत्मा का प्रवेश और उससे किशोरबाबू क्या बातें करना एक आत्मालाप ही है। “नहीं अमोलक, तुम मुझे अकेला छोडकर मत जाओ। और सुनो अमोलक, तुम कैसे भूल गए कि तुम गांधी के चेले हो। तुम हिंसा करने पर कैसे तुले हो ? अमोलक मेरी बात सुनो।”<sup>2</sup> अमोलक की आत्मा किशोर बाबू के शरीर में प्रवेश करती है, तब वह उससे बातें करते रहते है। ‘शेष कादम्बरी’ में रूबी गुप्ता अपने पारिवारिक जीवन को याद करती है तो अपने आप से ही बातें करती रहती है। ‘शेष कादम्बरी’ की रूबी दी अपने अतीत की यादों में अपने मन से बातें करती हर बार दिखायी देती है। “समय कैसे धुन की तरह सबकुछ खा जाता है, सारी चमक फीकी पड जाती है, सारे रंग बदरंग हो जाते है, पर आदमी का मन ? रूबी दी को लगा कि पता नहीं कैसे आदमी का मन किसी-न-किसी कोने में वैसा का वैसा ही उम्मीद लिए, वैसा ही उडने-उडने को आतुर।”<sup>3</sup> इस तरह मानवी जीवन अपने उम्मीदों के सहारे जीता है। ‘कोई बात नहीं’ के शशांक की दादी कहानी के माध्यम से अपने जीवन की सारे बातें कहती है।

- 
1. अलका सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास, पृ. 214
  2. वही, पृ. 206
  3. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ. 16

#### 4.5.4-4 पत्रात्मक शैली :-

अपनी प्रकृति में यह शैली भी आत्मकथात्मक जैसी ही है। पत्र लिखना भी आत्मकथा की तरह किसी व्यक्ति का ही लेखन है। “पात्र के द्वारा लेखक - पात्र, अपना चिंतन, दृष्टिकोण, प्रतिक्रियाएँ, समझ, संस्कार, मर्यादाएँ, प्रतिभा आदि को व्यक्त करता है।”<sup>1</sup>

अलका जी ने अपने उपन्यासों में पत्रात्मक शैली का उपयोग अधिक मात्रा में किया है। ‘कलिकथा : वाया बाइपास’ उपन्यास का नायक किशोर बाबू कोलकाता शहर के हर चौक में बिछाए गए गांधी, सुभाष, नेहरू के पुतलों की स्थिति के बारे में जानकारी पत्र द्वारा बंगाल के मुख्यमंत्री ज्योती बसू को देना चाहते हैं। ‘शेष कादम्बरी’ की कादम्बरी रूबी दी को पत्र के द्वारा अपने मन की सारी बातें कहना चाहती है।

1) मेरी अपनी प्यारी नारी,

प्यारी जो प्यार देती है और जिसे प्यार किया जा सकता है। पर इस बात को मानना जीवन का सबसे कठिन काम है यानी इस प्यार को ....।<sup>2</sup> इससे यह स्पष्ट होता है कि कादम्बरी अपनी नानी याने रूबी दी को बहुत प्यार करती है, अपना सबकुछ उन्हें ही माना है।

‘कोई बात नहीं’ में शशांक का दोस्त जोसेफ अपनी मन की बातें जो और किसी से नहीं कह सकता वह पत्र द्वारा शशांक की माँ को बताना चाहता था।

2) डियर मिसेज चौधरी,

आपकी चिट्ठी पढ़कर मैं बहुत सोच में पड़ गया। पूरे एक सप्ताह तक मैं इसका जवाब नहीं दे सका क्योंकि मैं सोचता ही जा रहा था।<sup>3</sup> इससे स्पष्ट है कि अपनी राय देने के लिए भी पत्र का इस्तेमाल किया जा सकता है। पत्र लेखन में उन्मुक्त बातें कहीं जा सकती हैं।

#### 4.5.4-5 डायरी शैली :-

यह शैली भी प्रवृत्ति में आत्मकथा एवं पत्रात्मक शैली की सजातीय ही है। इसमें निजता का अंश सर्वाधिक होता है, क्योंकि पत्र तो फिर भी किसी एक दूसरे के लिए होता है। परंतु डायरी सिर्फ अपने लिए। इसीलिए इसमें कोई बनावट नहीं होती। सारी असलियतें इसमें दर्ज होती हैं।

1. डॉ. पी. वी. कोटमे - श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्पविधान, पृ.236

2. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ. 162

3. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृ.173

अलका जी ने अपने 'कलिकथा : वाया बाइपास' उपन्यास में डायरी शैली का प्रमुखता से प्रयोग हुआ है। किशोर बाबू अपनी युवावस्था में अपने जीवन में घटित प्रमुख बातें लिखकर रखी थी, जिसे उनके बाइपास ऑपरेशन के बाद लेखिका पाठकों के सामने रखती है।

“डायरेक्ट एक्शन डे - 16 अगस्त, 1946 का दिन अमोलक के मरण का दिन नहीं बना...”<sup>1</sup>

“पंद्रह अगस्त, उन्नीस सौ सत्तानबे आजादी की पचासावी वर्षगांठ के दिन सुबह-सुबह किशोर बाबू के कानों में बंगल के मकान में बजते रेडिओं की आवाज पड़ी।”<sup>2</sup> इस तरह किशोर बाबू ने जो डायरी लिखी थी उसी के जरिए यह उपन्यास पूरा होता है।

#### 4.5.4.6 किस्सागोई शैली :-

“किस्सागोई अथवा लोक कथात्मक शैली वस्तुतः उस शैली रूप को कहते हैं जिसमें मौखिक रूप से प्रचलित अनेक कथाओं का अन्तः संबंध स्थापित करके प्रस्तुत किया जाता है।”<sup>3</sup> कथाकृति के लिए यह शैली एक आदर्श रचनात्मक का सबब हो जाती है। यह शैली हमारी परंपरा में निहित है।

लेखिका अलका सरावगी ने उपन्यासों में अधिकतर इसी शैली का प्रयोग किया है। 'कोई बात नहीं' उपन्यास में दादी की घुटन भरी गाथाओं की जानकारी देते समय “उस जमाने में बिना माँ की बेटा का ब्याह होना कोई आसान था? माँ के बिना कौन दहेज दायजा देता? शादी के बाद कौन लाड-चाव करता? तिस पर मेरे कोई भाई नहीं।”<sup>4</sup> इस प्रकार की दादी की जीवन गाथाओं से यह उपन्यास भरा पडा है। इस प्रकार शशांक को हमेशा दादी अपनी गाथाएँ सुनाती है। उसी प्रकार जतीन दा के आतंकभरे किस्से भी इस उपन्यास में भरे पडे है।

#### 4.5.4.7 पूर्व दीप्ति शैली (फ्लैश बैक) :-

इसे अंग्रेजी में 'फ्लैश बैक' कहते हैं और हिंदी में भी 'फ्लैश बैक' ही प्रयोग में आता है, 'पूर्व दीप्ति' बहुत कम ही कहा जाता है। प्रकृति में यह चेतना प्रवाही से जुडती विधि है। परंतु अंतर बहुत स्पष्ट है। 'पूर्वदीप्ति' में कोई पात्र किसी वजह से अपनी पिछली यादों में जाता है और फिर

- 
1. अलका सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास, पृ. 164
  2. वही, पृ. 192
  3. डॉ. पी. वी. कोटमे - श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्पविधान, पृ.283
  4. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृ.36

सारा कुछ अतीत का आने लगता है, जब कि चेतना प्रवाही में अतीत-वर्तमान की आवा-जाही बनी रहती है, यही स्पष्ट अंतर है दोनों में।

“वर्तमान में चलती हुई कहानी को झट से अतीत की ओर मोड़कर तथा विशिष्ट संदर्भों में क्रमबद्ध कर, उपन्यास शिल्प में पाठकों के लिए आकर्षण पैदा किया जाता है।”<sup>1</sup>

अलका जी ने ‘कलिकथा : वाया बाइपास’ के प्रारंभ में किशोर बाबू जो उपन्यास के नायक है। वे कोलकाता की गलियों में दौड़ती गाड़ियाँ, बसों, मिनी बसों के धुए तथा चीखते हॉर्न के ब्रेक के आवाजों के बीचों-बीच घुम रहे हैं। घुमते-घुमते वे अंतर्गत के अनेक द्वंद्व के साथ अपनी बचपन की यादों में खो जाते हैं। और बचपन से भी पिछे अपने दादा परदादा के इतिहास की छान बीन लेते हैं। यह इतिहास सन 1757 से अर्थात् दादा-परदादा अमिचंद से होते हुए रामविलास - केदार बाबू - किशोर बाबू और नायक बेटे तक आता है। ‘शेष कादम्बरी’ में नायिका रूबी दी अपने पति और बेटियों के यादों में अपने वैवाहिक जीवन में पीछे चली जाती है। “दिल की बीमारी होने के बाद कई बार महीनों बिस्तर पर इसी तरह पड़ा रहना होता था, पर उन्हें कभी बेचैन नहीं देखा। रूबी दी बाहूर से आती तो हँसकर कहते, रूबी गुप्ता देश का उद्धार कर आई। उनके कहने के पीछे हो सकता है व्यंग्य का क्षोभ रहा हो पर कही गहरा स्नेह भी था। लेकिन गौरी के कहने में खाली क्षोम रहता था, तो क्या गौरी ने यह चीज सुधीर से ही ली थी ?”<sup>2</sup> इस प्रकार रूबी दी अपने अतीत की यादों में हमेशा डूबी रहती थी। इस तरह अलकाजी ने अपने उपन्यासों में अनेक शैलियों का प्रयोग किया है।

### निष्कर्ष :-

1. आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तु का आरंभ वर्णनात्मक, पत्रात्मक और काव्यात्मक शैलीद्वारा किया है। प्रस्तुत उपन्यासों में नारी समस्या, शारीरिक समस्या आदि अंगों की चर्चा की है। ‘कलिकथा : वाया बाइपास’ का कोलकाता शहर के वर्णन से आरंभ किया गया है जो लुभावना लगता है। जिससे शहर की हालत का अंदाजा आता है। उसी तरह ‘शेष कादम्बरी’ में रूबी दी एक पत्र या आवेदन पढ़ रही है उसी आवेदन के साथ किया है।

---

1. पी. वी. कोटमे - श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्पविधान, पृ.231

2. अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ.203

और 'कोई बात नहीं' का आरंभ काव्य पंक्तियों के द्वारा किया गया जो अपनी अलगता दर्शाता है।

2. आलोच्य उपन्यासों में कथावस्तु का विकास हर मुख्य पात्र पर या उस मुख्य कथा पर आधारित दिखाया गया है। इन उपन्यासों में विकास के चरण किशोर बाबू की तीन जिंदगियाँ जो हर वक्त अपने-अपने ढंग से बदलती रहती है। रूबी दी के संस्था में आनेवाले केस उन्हें सुलझाते, 'कोई बात नहीं' की दादी की कहानियाँ, जतिन दा के आतंक भरे किस्से और आरती मौसी की कथाएँ इसके साथ मुख्य पात्र शशांक के विकलांगता का संघर्ष आदि है।
3. उपन्यास के पात्र संघर्ष में अपनी जिंदगी से जुझते हुए नजर आते हैं। किशोर बाबू अपने बहात्तरवें साल में भी जीवन जीने के लिए संघर्ष करते रहते हैं। रूबी दी अपने संस्था में आए केस के साथ हमेशा संघर्षरत दिखायी देती है। शशांक शरीर से विकलांग होने के कारण हमेशा अपनी विकलांगता से संघर्ष करता रहता है। इस तरह उपन्यास में संघर्ष एक महत्वपूर्ण भाग होता है जो कथावस्तु को आगे बढ़ाता रहता है।
4. कथावस्तु में चरमसीमा और अंत महत्वपूर्ण भाग होता है। कथावस्तु का अंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि अंतहीन कथावस्तु पूर्ण नहीं होता है। 'कलिकथा : वाया बाइपास' का अंत आजादी के बाद आयी हुई भारत की स्थिति गति का वर्णन किया है। 'शेष कादम्बरी' में रूबी दी अंत में अपनी सारी जायदाद नातिन कादम्बरी के नाम कर देती है। 'कोई बात नहीं' में शशांक अच्छा होने की कोशिश करता और इसमें माँ उसे सहारा देती है।
5. चरित्र चित्रण में उनके उपन्यासों के पात्र युगीन परिवेश को चित्रित करते हैं। इन पात्रों की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ हैं। पात्रों में अलगता के साथ आधुनिकता, सामाजिक दृष्टिकोण, राजनीतिक दृष्टि इसमें विशिष्टता है। इस उपन्यासों के पात्र अपनी-अपनी जगह महत्वपूर्ण हैं। हर पात्र अपनी अपनी निजी जिंदगी को सामने रखता है। उसमें अलग-अलग धर्मों के, जाति के पात्र दर्शाए हैं। इन उपन्यासों के पात्रों में स्वाभाविकता, मौलिकता, अनुकूलता, वैयक्तिकता, सजीवता आदि विशेषताएँ दिखायी देती हैं।
6. आलोच्य उपन्यासों के संवाद या कथोपकथन बहुत ही सुस्पष्ट हैं। इसमें सरल, स्वाभाविक, मार्मिक, भावात्मक तथा मारवाडी भाषा में लोकगीतों में तथा काव्यपंक्तियों में दर्शाया गया है लेकिन ऐसे होकर भी सारपूर्ण और अर्थगर्भित है।



7. आलोच्य उपन्यासों की भाषा शैली बहुत ही मुहावरेदार और कहावतों से युक्त है। इसमें लेखिका ने अरबी, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है। उसी के साथ मुहावरें (रूढोक्ति), कहावत (लोकोक्ति), सूक्ति, साहित्यिक काव्य पंक्तियों का प्रयोग भी किया है। आलोच्य उपन्यासों की भाषा सरल स्वाभाविक होने के साथ-साथ प्रेम प्रसंगों के दौरान शिथिल कोमलकांत पदावली के समान बन पड़े है।
8. शैली का संबंध लेखिका की रुचि से होता है। जिस शैली का उपयोग ज्यादा किया जाता है उस शैली में उस रचनाकार की रुचि ज्यादा होती है। वह किस उपन्यास को किस शैली में व्यक्त करना चाहता है, यह उस उपन्यास के कथ्य और लेखक की दृष्टि पर निर्भर करता है। अलका सरावगी ने अपने उपन्यासों में विविध शैलियों का प्रयोग किया है। उनके उपन्यासों में वाचक शैली, विवरणात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, डायरी शैली, किस्सागाई शैली, पूर्व दीप्ति शैली (फ्लैश बैक) आदि शैलियों का कलात्मक ढंग से प्रयोग किया है। इस प्रकार अलकाजी ने भाषा और शैली के कारण साहित्य जगत में अलग स्थान बनाया है।

समग्र रूप से अवलोकन करने पर कहा जा सकता है कि अलकाजी अपनी भाषा, कथ्य, शैली को अलगता से लिखने से साहित्य संसार में विशिष्ट छाप छोड़ दी है।

-----x-----